प्रथमावृत्ति
२०००

आश्विन कृष्णा १ (क्षमावणी)
श्री वीर नि० सं० २४९८
विक्रमाब्द २०२९
सितम्बर १९७२

मुद्रक :
नेमीचन्द बाकलीवाल
कमल प्रिन्टर्स
मदनगंज—किशनगढ़ (राज०)

क्रमेण प्रवृत्य चैत्यस्तवनेन त्रिःपरीत्य द्वितीयवारेऽप्युविश्य पंचगुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोमीति विज्ञाप्य उत्थाय स्तुत्वा तृतीयवारेऽप्युपविश्यालोचनीयः । एवमात्माधीनता प्रदक्षिण करणं त्रिवारं निष्पन्नत्रयं चतुः शिरोद्वादशावर्तकमिति क्रियाकर्म षड्विधं भवति ।

अनगारधर्मामृतोक्त उद्धरण—

चैत्यपंचगुरुस्तुत्या नित्या संध्या सुवन्दना ।

* * * *

जिनदेववन्दणाए चेदियभत्तीय पंचगुरुभत्ती ।

* * * *

ऊनाधिक्य विशुद्धयर्थं सर्वत्र प्रियभक्तिका ।

अनगारधर्मामृत में भी पं॰ आशाधरजी ने निम्नानुसार विधि बतलाई है—

श्रुतदृष्ट्यात्मनि स्तुत्यं पश्यन् गत्वा जिनालयम् ।
कृतद्रव्यादिशुद्धिस्तं प्रविश्य निसहीगिरा ॥
चैत्यालोकोधदानन्दगलद्बाष्पस्त्रिरानतः ।
परीत्य दर्शनस्तोत्रं वन्दना मुद्रया पठन् ॥
कृत्येर्यापथ संशुद्धिमालोच्यानम्रकाङ्घ्रिदोः ।
नत्वाश्रित्य गुरोः कृत्यं पर्यङ्कस्थोऽग्रमंगलम् ॥
उक्त्वात्तसाम्यो विज्ञाप्य क्रियामुत्थाय विग्रहम् ।
प्रह्वीकृत्य त्रिभ्रमैकशिरोऽवनति पूर्वकम् ॥

होकर "निःसही, निःसही" शब्दका उच्चारण करते हुए जिनमंदिरमें प्रवेश करे। वहाँ जिनमंदिरमें आकर "ईर्यापथशुद्धि" को करके अति भक्ति पूर्वक जिनेन्द्र भगवानकी स्तुति करके जिनेन्द्र भगवान्के पास में बैठकर नीचे लिखी विधि से सामायिक पूजा विधि पूर्ण करे।

प्रथमतः मंत्रपूर्वक हस्त शुद्धि करके "सकली क्रिया विधि" करें एवं कूट बीजाक्षर मंत्रों के द्वारा दस दिशाओं का बंधन करे। इसके आगे इसी भाव संग्रह में पंचामृत अभिषेक-विधि, पूजन, विसर्जन विधि दी गई है। नंतर १ जाप्य करके "चैत्यभक्ति एवं पंचगुरुभक्ति का पाठ करके शांति भक्ति करने का विधान किया गया है। प्रारम्भ में ईर्यापथ शुद्धि के बाद सिद्ध भक्ति एवं अभिषेक पूजन के बाद चैत्य पंचगुरु शांति भक्ति इस प्रकार से श्रावकों की सामायिक विधि अथवा पूजा विधि में ४ भक्तियों के करने का विधान अन्यत्र भी पाया जाता है।

श्री पूज्यपादाचार्यकृत पंचामृताभिषेक पाठ में लिखा है—

आनम्याहँतमादावहमपि विहितस्नानशुद्धिः पवित्रै- ।
स्तोयैः सन्मंत्रयंत्रैर्जिनपतिसवनाम्भोभिरप्यात्तशुद्धिः ॥
आचम्यार्च्यं च कृत्वा शुचिधवलदुकूलान्तरीयोत्तरीयः ।
श्रीचैत्यावासमानौम्यवनतिविधिना त्रिःपरीत्य क्रमेण ॥
द्वारं चोद्घाट्य वक्त्राम्बरमपि विधिनेर्यापथाख्यां च शुद्धिं ।
कृत्वाहं सिद्धभक्तिं श्रुतसकलीसत्क्रियां चादरेण ॥
श्रीजैनेन्द्रार्चनार्हं क्षितिमपि यजनद्रव्यपात्रात्मशुद्धिं ;
कृत्वा भक्त्या विशुद्धया त्वहमहमधुना प्रारभेयं जिनस्य ॥

प्रकाशकीय वक्तव्य

इस पुस्तक में सबसे पहले जो "सुप्रभाताष्टक" और मंगल-स्तुति हैं वे संस्कृत और हिन्दी दोनों ही पू० आ० श्री ज्ञानमती माताजी की बनाई हुई हैं। अनंतर देववंदना प्रयोगविधि क्रियाकलाप ग्रंथ से संक्षेप से ली गई है। १० पेज से जो संस्कृत में "देववंदना विधि" है वह भी क्रियाकलाप से ली गई है इसमे चैत्य भक्ति तो श्री गौतमस्वामी की बनाई हुई है एवं पंचगुरुभक्ति श्री कुन्दकुन्दस्वामी की बनाई हुई है, पेज २५ से जो "देववंदना विधि" हिंदी पद्यानुवाद में है उसे पूज्या श्री ज्ञानमती माताजी ने हिंदी में रुचि रखने वाले भाई बहिनों के लिए सुललित सरल भाषा में कर दिया है। यह सामायिक विधि आगम के अनुसार है इसे ही प्रतिदिन सामायिक के समय विधिवत् करना चाहिये क्योंकि विधिवत् क्रियाओं का जैनसिद्धांत में बहुत ही महत्त्व बतलाया गया है। इसके बाद पेज ३८ से जो "पूजा मुख विधि" छपी है वह भी प्रतिष्ठा शास्त्रों के आधार से है उसके श्लोकों का भी हिंदी पद्य में माताजी ने अनुवाद कर दिया है जो सभी के लिए सरल और उपयोगी बन गई है। पेज ३८ से ४७ तक छपी इसी विधि को करके पुनः अभिषेक और पूजन करके पेज ४६ पर छपी "पूजा अन्त्यविधि" को करना चाहिये जो कि विसर्जन सहित पेज ५६ तक छपी हुई है। पेज ५६ पर चतुर्दशी के दिन पूजन के मध्य में ही चैत्यभक्ति के अनंतर जो श्रुतभक्ति अधिक पढ़ने का विधान है उसे चतुर्दशी के दिन पूजन में कर लेना चाहिये एवं पेज ५८ पर अष्टमी तिथि की क्रिया छपी है उसे अष्टमी के दिन करना चाहिये। पेज ६५ पर श्री पूज्यपाद स्वामी रचित शांतिभक्ति है जिसका हिंदी पद्यानुवाद पूज्या माताजी के द्वारा रचित है यह स्तुति भी प्रतिदिन पढ़ने योग्य है। एवं अन्त में छोटी सी बाहुबली स्तुति भी बहुत ही सुन्दर एवं भावपूर्ण है। "उपायंदना" में सम्पूर्ण

संपदभृते	संपद्भृते	८१	[illegible]
सर्वेपु	सर्वगृहेपु	८३	३
कतु	कंतु	८३	[illegible]
विवान्	बिम्वान्	८४	२०
शश्वत	शाश्वत	८६	१४
प्रतिग्रह	प्रतिगृह	८९	२०
सुरपि	सुरर्पि	९२	११
ध्यानाग्नि	ध्यानाग्निरना	९६	१६
ननरनाथो	नरनाथो	१०३	१
प्रसादाद	प्रसादाद्	१०४	६
निजर	निर्जर	१०४	७
द्वय	द्वय	१०५	३
निधरयास्य	निधनस्यास्स	१०७	७
भक्ति कांश्चापि	भाक्तिकांश्चापि	१०८	२
सम्यग	सम्यग्	१०९	१६
फणांत	फणात	१११	२
ध्वजपक्ति	ध्वजपक्ति	१११	२०
श्रीपार्श्वनाथस्य	श्रीपार्श्वनाथाय	११४	७

दीक्षा अंगीकार की है जो अभयमती माताजी के नामसे विख्या
हैं, एक और लघु सहोदरी कु० मालती ने भी ३ वर्ष पूर्व से जीव
ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर रखा है, आपके लघु भ्राता श्री रवीन्द्रकुमार
ने भी बी० ए० पास कर कुछ दिन आपके पास रहकर शास्त्री
परीक्षा पास की, आपही की प्रेरणा से वैवाहिक बंधन को ठोक
कर २१ वर्ष की अल्पवय में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर लि
है। इस प्रकार आपका सम्पूर्ण परिवार धार्मिक परिणामों से ओ
प्रोत है।

अभी आप अजमेर चातुर्मास के उपरांत कुछ दिन ब्यावर
विराजीं। वहां आपकी प्रेरणा से जैन भूगोल रचना के अन्तर्गत
जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य चल रहा है जिसमें लगभग बीस
पचीस हजार रुपया व्यय होगा। यह अपने ढंग की एक अद्वितीय
रचना बनेगी। वहां से अपने आद्य गुरु आ० र० श्री देशभूषणजी
महाराज के दर्शनार्थ एवं पच्चीससौवें महावीर निर्वाणोत्सव को
सफल बनाने के लिए भारत की राजधानी देहली में प्रथम बार संघ
के साथ पधारी हैं।

आपकी यह उत्कट भावना है कि निर्वाणोत्सव के उपलक्ष
में विशाल मैदान पर खुले रूप में "जैन भूगोल" की कृत्रिम रचनाका
निर्माण वृहत् रूप में किया जावे। यह जैनाजैन जगत में
एक अति आकर्षक अलौकिक रचना होगी जिसमें, बिजली,
फव्वारों एवं बाग बगीचों की आधुनिक साज सज्जा के आकर्षण से
प्रत्येक दर्शनार्थी की जिज्ञासा जैन भूगोल एवं जैन धर्म को सूक्ष्मता
से जानने की होगी। यह रचना देश विदेश के लोगों के लिए
दर्शनीय स्थल बनकर हजारों वर्षों तक निर्वाणोत्सव की याद दिलाती
रहेगी।

अर्हत्सुसिद्धगुरुसूरिसुपाठकांश्च ।
साधून् मुदा प्रणम सर्व मुमुक्षुवर्गान् ॥
जैनेन्द्रबिम्बमवलोक्य विमुञ्च रागं ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भुवि विस्फुरितं प्रभातं ॥३॥

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय-साधु पंचपरमेष्ठी को ।
मुक्ति वधू प्रिय, मुमुक्षु मुनिगण रुचि से वंदो इन सबको ॥
श्री जिन वीतराग प्रतिमा का दर्शन कर झट तजो कुराग ।
उठो भव्य ! अब चतुर्दिशा में प्रकाशमय हो रहा प्रभात ॥

घात्यंतकांतशुचिकेवलबोधभास्वान् ।
सज्ज्ञानदीधितिविनष्टतमःसमूहः ॥
तं श्री जिनं किल भज त्यज मोहनिद्रां ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भुवि विस्फुरितं प्रभातं ॥४॥

घातिकर्म संहारक निर्मल केवलज्ञान विभाकर हैं ।
ज्ञानज्योति मय खर किरणों से तमसमूह के ध्वंसक हैं ॥
उन जिनवर का आश्रय लेवो करो मोह निद्रा का त्याग ।
उठो भव्य ! अब चतुर्दिशा में प्रकाशमय हो रहा प्रभात ॥

तारागणा अपि विलोक्य विधोः सपक्षं ।
ये निष्प्रभं विमतयोऽपि च यांति नाशं ॥
स्याद्वादभास्वदुदये त्यज मोहनिद्रां ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भुवि विस्फुरितं प्रभातं ॥५॥

श्रीमज्जिनेन्द्र ! हर मे त्वरमार्तरौद्रं ।
'ज्ञाने मतिं' वितनु शांतिमपास्तदुःखां ॥
संघाय, मे च जगते, कुरु मंगलं च ।
उत्तिष्ठ भव्य ! भुवि विस्फुरितं प्रभातं ॥८॥

न् ! भगवन् ! शीघ्र हमारे आर्तरौद्र दुर्ध्यान हरो ।
'ज्ञानमति' करो सदा दुःख रहित शांति को पूर्ण करो ॥
के, 'जग के लिये, हमारे लिये, करो मंगल सतत ।
भव्य ! अब चतुर्दिशा में प्रकाशमय हो रहा प्रभात ॥

तनस्य भवने घंटा–नादेन प्रतिवादिनः ।
मोनिभाः प्रणष्टा हि ते जिनाः संतु नः श्रियै ॥९॥

प्रभु के चैत्यसदन में घंटाध्वनि हो रही महान् ।
वादिजन उसको सुन नष्ट हो रहे तिमिर समान ॥
व का सुखद सुमंगल प्रभात शुभ मंगलमय हो ।
जनदेव अमंगलहारी हमें मुक्ति लक्ष्मी प्रद हों ॥

वट्टिदा वा, संघादिदा वा, उद्दाविदा वा, परिदाविदा वा, ...रिंच्छिदा वा, लेस्सिदा वा, छिंदिदा वा, भिंदिदा वा, ठाणदो ..., ठाण चंकमणदो वा, तस्स उत्तरगुणं, तस्स पायच्छित्तकरणं, ...स्स विसोहिकरणं जाव अरहंताणं भयवंताणं णमोकार पज्जुवासं ...रेमि तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि । [९ जाप्य]

इस प्रकार प्रतिक्रमण पढ़कर "णमो अरहंताणं" इत्यादि ...था का सत्ताईस उच्छ्वासों में नौ बार खड़े-खड़े जाप्य देवें। ...नन्तर पर्यंकासन से बैठकर नीचे लिखा "आलोचना-पाठ" पढ़ें।

• आलोचना •

ईर्यापथे प्रचलिताद्य मया प्रमादा-
देकेन्द्रियप्रमुखजीवनिकायबाधा ।
निर्वर्तिता यदि भवेदयुगान्तरेक्षा
मिथ्या तदस्तु दुरितं गुरुभक्तितो मे ।।

इच्छामि भंते ! आलोचेउं इरियावहियस्स पुव्वुत्तर-दक्खिणपच्छिमचउदिसविदिसासु विरहमाणेण जुगंतरदिट्ठिणा भव्वेण दट्ठव्वा । पमाददोसेण डवडवचरियाए पाणभूदजीव-सत्ताणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमणिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

निःसहि" ऐसा तीन बार उच्चारण कर चैत्यालय में प्रवेश करें। वहाँ जिनेन्द्रदेव के मुख का अवलोकन कर तीन बार प्रणाम करें। अनन्तर "दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भवतापहारी" इत्यादि दर्शन स्तोत्र को वन्दना मुद्रा जोड़कर पढ़ते हुए चैत्यालय की तीन प्रदक्षिणा देवें। प्रत्येक दिशा में तीन-तीन आवर्त और एक-एक शिरोनति करते जावें।

बाद में यदि बैठकर सामायिक करना है तो बैठकर अथवा खड़े होकर सामायिक करना है तो खड़े होकर ईर्यापथ शुद्धि पाठ से सामायिक शुरू करें।

देववन्दना विधि (सामायिक विधि)

• ईर्यापथ शुद्धि •

निःसंगोऽहं जिनानां सदनमनुपमं त्रिः परीत्येत्य भक्त्या,
स्थित्वा गत्वा निषद्योच्चरणपरिणतोऽन्तः शनैर्हस्तयुग्मम्।
भाले संस्थाप्य बुद्ध्या मम दुरितहरं कीर्तये शक्रवन्द्यं,
निन्दादूरं सदाप्तं क्षयरहितममुं ज्ञानभानुं जिनेन्द्रम्॥

पडिक्कमामि भंते! इरियावहियाए विराहणाए अणागुत्ते अइगमणे, णिग्गमणे, ठाणे, गमणे, चंकमणे, पाणुग्गमणे, बीजुग्गमणे, हरिदुग्गमणे, उच्चार-पस्सवण-खेल-सिंहाण-वियडिपइट्ठावणियाए, जे जीवा एइंदिया वा, बे इंदिया वा, ते इंदिया वा चउरिंदिया वा, पंचिंदिया वा, णोल्लिदा वा, पेल्लिदा वा

अनन्तर उठकर गुरु को अथवा देव को पंचांग नमस्
करें पुनः गुरु के समक्ष अथवा गुरु दूर हों तो देव के समक्ष
कृत्य विज्ञापना करें कि—

नमोऽस्तु भगवन् ! देववन्दनां करिष्यामि ।

अनन्तर पर्यंकासन से बैठकर नीचे लिखा मुख्य मंगल पढ़ें

सिद्धं सम्पूर्णभव्यार्थसिद्धेः कारणमुत्तमम् ।
प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादनम् ॥१॥

सुरेन्द्रमुकुटाश्लिष्टपादपद्मांशुकेशरम् ।
प्रणमामि महावीरं लोकत्रितयमंगलम् ॥२॥

खम्मामि सव्वजीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूदेसु वैरं मज्झं ण केण वि ॥१॥

रागबंधं पदोसं च हरिसं दीणभावयं ।
उस्सुगत्तं भयं सोगं रदिमरदिं च वोस्सरे ॥२॥

हा ! दुट्ठकयं हा ! दुट्ठचिंतियं भासियं च हा ! दु
अंतोअंतो डज्झमि पच्छुत्तावेण वेदंतो ॥३॥

दव्वे खेत्ते काले भावे य कदावराहसोहणयं ।
णिंदणगरहणजुत्तो मणवचकाएण पडिकमणं ।

समता सर्वभूतेषु संयमः शुभभावना ।
आर्तरौद्रपरित्यागस्तद्धि सामायिकं मतं ॥५॥

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, सा
लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध
सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तो
धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।

अढाइज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णारसकम्मभूमिसु जा
अरहंताणं भयवंताणं आदियराणं तित्थयराणं जिणाणं
जिणोत्तमाणं केवलियाणं, सिद्धाणं बुद्धाणं परिणिव्वुदाणं
अंतयडाणं पारयडाणं, धम्माइरियाणं, धम्मदेसियाणं, धम्म
यगाणं, धम्मवरचाउरंगचक्कवट्टीणं देवाहिदेवाणं, णाण
दंसणाणं चरित्ताणं सदा करेमि किरियम्मं ।

करेमि भंते ! सामाइयं (देववन्दनां) सव्वसावज
पच्चक्खामि जावज्जीवं (जावन्नियमं) तिविहेण मणसा व
काएण ण करेमि ण कारेमि कीरंतं पि ण समणुमणामि ।
भंते अइचारं पच्चक्खामि, णिंदामि गरहामि अप्पाणं,
अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि ताव कालं पावकम्म
दुच्चरियं वोस्सरामि ।

इसप्रकार उक्त सामायिक दंडक पढ़कर पुनः तीन आवर्त
और एक शिरोनति करें। पश्चात जिनमुद्रा से कायोत्सर्ग करें

ासमें "णमो अरहंताणं" इत्यादि मंत्र का सत्ताईस उच्छ्वासों में
ौ बार पूर्वोक्त विधि के अनुसार जाप देवें या चिंतवन करें।

अनन्तर भूमि स्पर्शनात्मक पंचांग नमस्कार करें पश्चात
र्वोक्त विधि से खड़े होकर तीन आवर्त एक शिरोनति करके नीचे
ठखा "चतुर्विंशतिस्तव" पढ़ें। तद्यथा—

• चतुर्विंशतिस्तव •

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंतजिणे।
णरपवरलोयमहिए विहुयरयमले महप्पण्णे ॥ १ ॥
लोयस्सुज्जोययरे धम्मंतित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो ॥ २ ॥
उसहमजियं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वन्दे ॥ ३ ॥
सुविहिं च पुप्फयंतं सीयल सेयं च वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं भयवं धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ४ ॥
कुंथुं च जिणवरिंदं अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं।
वंदामि रिट्ठणेमिं तह पासं वड्ढमाणं च ॥ ५ ॥
एवं मए अभित्थुआ विहुयरयमला पहीण जर मरणा।
चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ६ ॥
कित्तिय वंदिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा।
आरोग्गणाणलाहं दिंतु समाहिं च मे बोहिं ॥ ७ ॥

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायेभ्यस्तथा च साधुभ्यः ।
सर्वजगद्वन्द्येभ्यो नमोऽस्तु सर्वत्र सर्वेभ्यः ॥ ४ ॥

मोहादिसर्वदोषारिघातकेभ्यः सदाहतरजोभ्यः ।
विरहितरहस्कृतेभ्यः पूजार्हेभ्यो नमोऽर्हद्भ्यः ॥५॥

क्षान्त्यार्जवादिगुणगणसुसाधनं सकललोकहितहेतुं ।
शुभनामानि धातारं वन्दे धर्मं जिनेन्द्रोक्तं ॥६ ॥

मिथ्याज्ञानतमोवृतलोकैकज्योतिरमितगमयोगि ।
सांगोपांगमजेयं जैनं वचनं सदा वंदे ॥७॥

भवनविमानज्योतिर्व्यंतरनरलोकविश्वचैत्यानि ।
त्रिजगदभिवन्दितानां वन्दे त्रेधा जिनेन्द्राणां ॥८॥

भुवनत्रयेऽपि भुवनत्रयाधिपाभ्यर्च्यतीर्थकर्तॄणाम् ।
वन्दे भवाग्निशांत्यै विभवानामालयालीस्ताः ॥९॥

इति पंच महापुरुषाः प्रणुता जिनधर्म-वचन-चैत्यानि ।
चैत्यालयाश्च विमलां दिशन्तु बोधिं बुधजनेष्टां ॥१०॥

अकृतानि कृतानि चाप्रमेयद्युतिमन्ति द्युतिमत्सु मन्दिरेषु ।
मनुजामरपूजितानि वंदे प्रतिबिम्बानि जगत्त्रये जिनानाम् ।११।

द्युतिमंडलभासुरांगयष्टीः प्रतिमा अप्रतिमा जिनोत्तमानाम् ।
भुवनेषु विभूतये प्रवृत्ता वपुषा प्राञ्जलिरस्मि वन्दमानः ।१२।

विगतायुधविक्रियाविभूषाः प्रकृतिस्थाः कृतिनां जिनेश्वराणां ।
प्रतिमाः प्रतिमागृहेषु कांत्याप्रतिमाः कल्मषशान्तयेऽभिवन्दे ।१३।

कथयंति कषायमुक्तिलक्ष्मीं परया शान्ततया भवान्तकानि
प्रणमाम्यभिरूपमूर्तिमंति प्रतिरूपाणि विशुद्धये जिनानाम्
यदिदं मम सिद्धभक्तिनीतं सुकृतं दुष्कृतवर्त्मरोधि तेन।
पटुना जिनधर्म एव भक्तिर्भवताज्जन्मनि जन्मनि स्थिरा मे ॥

अर्हतां सर्वभावानां दर्शनज्ञानसम्पदाम् ।
कीर्तयिष्यामि चैत्यानि यथाबुद्धि विशुद्धये ॥१६॥

श्रीमद्भावनवासस्थाः स्वयंभासुरमूर्तयः ।
वंदिता नो विधेयासुः प्रतिमाः परमां गतिम् ॥१

यावन्ति सन्ति लोकेऽस्मिन्नकृतानि कृतानि च ।
तानि सर्वाणि चैत्यानि वन्दे भूयांसि भूतये ॥१८॥

ये व्यन्तरविमानेषु स्थेयांसः प्रतिमागृहाः ।
ते च संख्यामतिक्रांताः सन्तु नो दोषविच्छिदे ॥१

ज्योतिषामथ लोकस्य भूतयेऽद्भुतसम्पदः ।
गृहाः स्वयंभुवः संति विमानेषु नमामि तान् ॥२०॥

वन्दे सुरतिरीटाग्रमणिच्छायाभिषेचनम् ।
याः क्रमेणैव सेवन्ते तदर्चाः सिद्धिलब्धये ॥२१

इति स्तुतिपथातीतश्रीभृतामर्हतां मम ।
चैत्यानामस्तु संकीर्तिः सर्वास्रवनिरोधिनी ॥२२॥

अर्हन्महानदस्य त्रिभुवनभव्यजनतीर्थयात्रिकदुरित-
प्रक्षालनैककारणमतिलौकिककुहकतीर्थमुत्तमतीर्थम् ।२

लोकालोकसुतत्त्वप्रत्यवबोधनसमर्थदिव्यज्ञान ।
प्रत्यहवहत्प्रवाहं व्रतशीलामलविशालकूलद्वितयम् ॥२४॥

शुक्लध्यानस्तिमितस्थितराजद्राजहंसराजितमसकृत् ।
स्वाध्यायमंद्रघोषं नानागुणसमितिगुप्ति-सिकतासुभगम् ।२५।

क्षान्त्यावर्तसहस्रं सर्वदया-विकचकुसुमविलसल्लतिकम् ।
दुःसहपरीषहाख्यद्रुततररंगत्तरंगभंगुरनिकरम् ॥ २६ ॥

व्यपगतकषायफेनं रागद्वेषादिदोष-शैवलरहितम् ।
अत्यस्तमोह-कर्दममतिदूरनिरस्तमरण-मकरप्रकरम् ।२७।

ऋषिवृषभस्तुतिमंद्रोद्रेकितनिर्घोष-विविधविहगध्वानम् ।
विविधतपोनिधि-पुलिनं सास्रवसंवरणनिर्जरानिस्रवणम् ।२८।

गणधरचक्रधरेन्द्रप्रभृतिमहाभव्यपुंडरीकैः पुरुषैः ।
बहुभिः स्नातं भक्त्या कलिकलुषमलापकर्षणार्थममेयम् ।२९

अवतीर्णवतः स्नातुं ममापि दुस्तरसमस्तदुरितं दूरं ।
व्यवहरतु परमपावनमनन्यजय्यस्वभावगम्भीरम् ॥३०॥

अताम्रनयनोत्पलं सकलकोपवह्नेर्जयात्
कटाक्षशरमोक्षहीनमविकारतोद्रेकतः ।
विषादमदहानितः प्रहसितायमानं सदा
मुखं कथयतीव ते हृदयशुद्धिमात्यंतिकीम् ॥३१॥

निराभरणभासुरं विगतरागवेगोदया-

निरायुधसुनिर्भयं विगतहिंस्यहिंसाक्रमात्
निरामिषसुतृप्तिमद्विविधवेदनानां क्षयात् ॥३२॥

मितस्थितनखांगजं गतरजोमलस्पर्शनं
नवांबुरुहचंदनप्रतिमदिव्यगन्धोदयम् ।
रवीन्दुकुलिशादिदिव्यबहुलक्षणालंकृतं
दिवाकरसहस्रभासुरमपीक्षणानां प्रियम् ॥३३॥

हितार्थपरिपंथिभिः प्रबलरागमोहादिभिः
कलंकितमना जनो यदभिवीक्ष्य शोशुध्यते ।
सदाभिमुखमेव यज्जगति पश्यतां सर्वतः
शरद्विमलचन्द्रमंडलमिवोत्थितं दृश्यते ॥३४॥

तदेतदमरेश्वरप्रचलमौलिमालामणि-
स्फुरत्किरणचुंबनीयचरणारविन्दद्वयम् ।
पुनातु भगवज्जिनेन्द्र ! तव रूपमन्धीकृतं
जगत् सकलमन्यतीर्थगुरुरूपदोषोदयैः ॥३५॥

अनन्तर चैत्य के सन्मुख बैठकर नीचे लिखा आलोचना पाठ

* आलोचना या अंचलिका *

इच्छामि भंते ! चेइयभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्
चेउं अहलोयतिरियलोय-उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि
जिणचेयाणि ताणि सव्वाणि तीसुवि लोएसु भवणवासिय
वितर-जोइसिय-कप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा

ण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण चुण्णेण,
व्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति
ंति णमंसंति अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंचेमि
ोमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ
गइगमणं समाहिमरणं जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

अनन्तर बैठे बैठे ही नीचे लिखी कृत्यविज्ञापना करें।

अथ पौर्वाह्निक देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-
यार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं पंचमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं
करोम्यहम् ।

अनन्तर उठकर पंचांग नमस्कार करें। पश्चात् भगवान के सन्मुख पहले की तरह खड़े होकर मुक्ताशुक्तिमुद्रा जोड़कर तीन आवर्त एक शिरोनति कर पूर्वोक्त "सामायिकदंडक" पढ़ें। अंत में तीन आवर्त एक शिरोनति कर सत्ताईस उच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण होने पर पुनः पंचांग नमस्कार कर तीन आवर्त एक शिरोनति करें पश्चात् "थोस्सामि" इत्यादि चतुर्विंशतिस्तव पढ़-कर अंत में तीन आवर्त और एक शिरोनति करें। अनन्तर भगवान् के सन्मुख पूर्वोक्तरीति से खड़े होकर नीचे लिखी हुई 'पंचमहागुरु-भक्ति' पढ़ें।

• पंचमहागुरुभक्ति •

मणुयणाइंदसुरधरियछत्तत्तया, पंचकल्लाणसोक्खावली पत्तया।
दंसणं णाण झाणं अणंतं बलं, ते जिणा दिंतु अम्हं वरं मंगलं ।१।
जेहिं झाणग्गिबाणेहिं अइदड्ढयं, जम्मजरमरणणयरत्तयं दड्ढयं।
जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं, ते महं दिंतु सिद्धा वरं णाणयं ।२।

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः ॥२॥
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं ।
तं खमहु णाणदेवय ! मज्झ य दुक्खक्खयं दिंतु ॥३॥

(अनंतर बैठकर नीचे लिखी आलोचना पाठ पढ़ें)

✽ आलोचना या अंचलिका ✽

इच्छामि भंते ! समाधिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउ रयणत्तयसरूवपरमप्पज्झाणलक्खणसमाहिं सव्वकालं अं पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिल सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

(अनन्तर यथावकाश आत्मध्यान करें)

॥ इति देववन्दनाविधिः समाप्तः ॥

सामायिक विधि (देववंदना विधि)

[मूल का हिन्दी पद्यानुवाद]

हे भगवन् ! मैं निःसंग हो जिनगृहकी प्रदक्षिणा करके ।
भक्ति से प्रभु सन्मुख आकर करकुड्मल शिर नत करके ॥
निंदा रहित दुरित हर अक्षय इंद्र वंद्य श्री आप्त जिनेश ! ।
सदा करूं संस्तवन मोहतमहर ! तव ज्ञानभानु परमेश ! ॥१॥

• ईर्यापथ शुद्धि •

हे भगवन् ! ईर्यापथिक दोष विशोधन हेतु ।
प्रतिक्रमण विधि मैं करूं श्रद्धा भक्ति समेत ॥१॥

गुप्ति रहित हो षट्कायों की मैं विराधना जो करता ।
शीघ्र गमन प्रस्थान ठहरने चलने में अरु भ्रमण किया ॥२॥
प्राणिगणपर गमन, बीजपर गमन, हरित पर चला कहीं ।
मल मूत्रादि नासिका मल कफ थूक विकृति को तजा कहीं ॥३॥

एकेन्द्रिय द्वीइन्द्रिय त्रयइन्द्रिय चउरिंद्रिय पंचेंद्री ।
जीवों को स्वस्थान गमन से रोका या अन्यत्र कहीं ॥४॥
रखा परस्पर पीड़ित कीना एकत्रित कीना घाता ।
ताप दिया या चूर्ण किया कूटा मूर्च्छित कीना काटा ॥५॥

ठहरे चलते फिरते को छिन्न भिन्न विराधित किया प्रभो ! ।
शुद्धि हेतु प्रायश्चित हेतु उन्हें विशोधन हेतु प्रभो ! ॥६॥

जब तक भगवत् अर्हत् के णवकार मंत्र का जाप्य करूं ।
तब तक पापक्रिया अरु दुश्चरित्र का बिल्कुल त्याग करूं ॥७॥

[नौ बार णमोकार मंत्र का जाप्य]

✲ आलोचना ✲

ईर्यापथ से गमन में मैंने किया प्रमाद ।
एकेन्द्रिय आदिक सभी जीवों का जो घात ॥१॥
किया यदि चउ हाथ भ्रम नहीं भूमि को देख ।
गुरु भक्ति से पाप सब हो मिथ्या मम देव ! ॥२॥

भगवन् ! ईर्यापथ आलोचन करना चाहूँ मैं रुचि से ।
पूर्वोत्तर दक्षिण पश्चिम चउदिस विदिशा में चलने से ॥३॥
चउकर देख गमन भव्यों का होता पर प्रमाद से मैं ।
शीघ्र गमन से प्राण भूत अरु जीव सत्व को दुःख दीने ॥४॥
यदि किया उपघात कराया अथवा अनुमति दी रुचि से ।
श्री जिनवर की कृपा दृष्टि से सब दुष्कृत मिथ्या होवें ॥५॥

नमोऽस्तु भगवन् ! देववन्दनां करिष्यामि ।

सभी भव्य की अर्थ सिद्धि के कारण उत्तम सिद्ध समूह ।
प्रशस्त दर्शन ज्ञान चरित के प्रतिपादक मैं तुम्हें नमूं ॥१॥
सुरपति के शेखर से चुंबित पाद पद्म अरुणित केशर ।
तीन लोक के मंगल जिनवर महावीर को करूं नमन ॥२॥

सभी जीव पर क्षमा करूं मैं सब मुझ पर भी क्षमा करो ।
सभी प्राणियों से मैत्री हो वैर किसी से कभी न हो ॥३॥
राग द्वेष अरु प्रद्वेष हर्ष, दीन भाव उत्सुकता को ।
भय अरु शोक रती अरती को त्याग करूं दुर्भावों को ॥४॥

हा ! दुष्कृत किये हा ! दुश्चिंते हा ! दुर्वचन कहे मैंने ।
कर कर पश्चात्ताप हृदय में झुलस रहा हूँ मैं मन में ॥५॥
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव से कृत अपराध विशोधन को ।
निंदा गर्हा से युत हो प्रतिक्रमण करूं मन वच तन सों ॥६॥

सभी प्राणियों में समता हो संयम हो शुभ भाव रहे ।
आर्तरौद्र दुर्ध्यान त्याग हो वही श्रेष्ठ सामायिक है ॥७॥

भगवन् नमोस्तु ! प्रसीदंतु प्रभु पादा वंदिष्येऽहं एषोऽहं सर्वसावद्य योगाद् विरतोऽस्मि ।

अथ पौर्वाह्णिक देववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म क्षयार्थं भाव पूजा वंदनास्तवसमेतं चैत्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

(चैत्यभक्ति करने की प्रतिज्ञा करके पंचांग नमस्कार करके तीन आवर्त एक शिरोनति करके मुक्ताशुक्ति मुद्रा के द्वारा सामायिक दंडक पढ़ें)

✿ सामायिक दंडक ✿

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं ॥

[३ आवर्त १ शिरोनति करके योगमुद्रा या जिनमुद्रा से कायोत्सर्ग करे (६ जाप्य) पुनः ३ आवर्त १ शिरोनति करके मुक्ता-शुक्ति मुद्रा करके थोस्सामि स्तवन पढ़े]

❀ थोस्सामि स्तवन ❀

स्तवन करूं जिनवर तीर्थंकर केवलि अनंत जिन प्रभु का ।
मनुज लोक से पूज्य कर्मरज मल से रहित महात्मन का ॥
लोकोद्योतक धर्म तीर्थंकर श्री जिन का मैं नमन करूं ।
जिन चउवीस अर्हंत तथा केवलि गण का गुण गान करूं ॥१॥

वृषभ, अजित, संभव, अभिनंदन, सुमतिनाथ का कर वंदन ।
पद्मप्रभ जिन श्री सुपार्श्व प्रभु चन्द्रप्रभ का करूं नमन ॥
सुविधि नामधर पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन सदा नमूं ।
वासुपूज्य जिन विमल अनंत धर्म प्रभु शांतिनाथ प्रणमूं ॥२॥

जिनवर कुंथु अरह मल्लि प्रभु मुनिसुव्रत नमि को ध्याऊं ।
अरिष्ट नेमि प्रभु श्री पारस वर्धमान पद शिर नाऊं ॥
इस विध संस्तुत विधुत रजोमल जरा मरण से रहित जिनेश ।
चौबीसों तीर्थंकर जिनवर मुझ पर हों प्रसन्न परमेश ॥३॥

कीर्तित वंदित महित हुए ये लोकोत्तम जिन सिद्ध महान ।
मुझको दें आरोग्यज्ञान अरु बोधि समाधि सदा गुणखान ॥
चन्द्र किरण से भी निर्मलतर रवि से अधिक प्रभाभास्वर ।
सागर सम गंभीर सिद्धगण मुझको सिद्धि दें सुखकर ॥४॥

[३ आवर्त १ शिरोनति करके वंदनामुद्राके द्वारा चैत्यभक्तिका पाठ करें]

• चैत्यभक्ति *

जय हे भगवन् ! चरण कमल तव कनक कमल पर करें विहार।
इंद्र मुकुट की कांति प्रभा से चुंबित शोभें अति सुखकार।
जात विरोधी कलुषमना क्रुध मान सहित जंतु गण भी
ऐसे तव पद का आश्रय ले प्रेम भाव को धरें सभी ॥१॥

जय हो श्रेयस्कर धर्मामृत वृद्धिंगत महिमाशाली।
कुगति कुपथ से प्राणिगण को निकालकर दे सुख भारी॥
नय को मुख्य गौण करने से बहुत भेद युत सुखदाता।
ऐसे जिनवचनामृतमय हे धर्म ! करो जग से रक्षा ॥२॥

जय हो जैनी वाणी जग में सप्तभंगमय गंगा है।
व्यय उत्पाद ध्रौव्ययुत द्रव्यों के स्वभाव को प्रगट करे॥
अनुपम शिवसुख द्वार खोलती अव्यय सुख को देती है
विघ्न रहित अरु कर्म धूलि से रहित मोक्ष को देती है ॥३॥

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधुगण सुर वंदित
त्रिभुवनवंदित पंच परम गुरु नमोऽस्तु तुमको मम संतत।
मोहारि के घातक द्वय रज आवरणों से रहित जिनेश
विघ्न-रहस विरहित पूजा के योग्य अर्हत् को नमूं हमेश ॥४॥

क्षमादि उत्तम गुण गण साधक सकल लोक हित हेतु महान्
शुभ शिवधाम धरें ले जाकर जिनवर धर्म नमूं सुख खान

मिथ्याज्ञान तमोवृत जग में ज्योतिर्मय अनुपम भास्कर ।
गणपूर्णमय विजयशील जिनवचन नमूं मैं शिर नत कर ॥५॥

भवनवासि व्यंतर ज्योतिष वैमानिक में नर लोक में जे ।
जिनभवनों की त्रिभुवन वंदित जिनप्रतिमा को वंदूं मैं ॥
भुवनत्रय में जितने जिनगृह भव विरहित तीर्थंकर के ।
भवाग्नि शांती हेतु नमूं मैं त्रिभुवनपति से अर्चित जे ॥६॥

इस विध प्रणुत पंचपरमेष्ठी श्री जिनधर्म जिनागम को ।
विमल चैत्य चैत्यालय वंदूं बुधजन इष्ट बोधि मम हो ॥
द्युतिकर जिनगृह में अकृत्रिम कृत्रिम अप्रमेय द्युतिमान ।
नर सुर पूजित भुवनत्रय के सब जिन बिंब नमूं गुणखान ॥७॥

द्युति मंडल भासुर तनु शोभित जिनवर प्रतिमा अप्रतिम हैं ।
जग में वैभव हेतु, उन्हें वंदूं अंजलिकर शिर नत मैं ॥
आयुध विक्रिय भूषा विरहित जिनगृह में प्रतिमा प्राकृत ।
कांति से अनुपम हैं कल्मष, शांति हेतु मैं नमूं सतत ॥८॥

परम शांति से कषाय मुक्ति को करतीं मनहर अभिरूप ।
मन के शोधक जिनकी प्रतिमा प्रणमूं मन विशुद्धि के हेतु ॥
दुष्कृत पथ रोधक मन सिद्ध भक्ति से हुआ पुण्य जो भी ।
भव भव में जिनधर्म हि में दृढ़ भक्ति रहे फल मिले यही ॥९॥

सब स्वार्थसिद्धि हेतु ज्ञान संपन्न प्रभु अर्हत् की प्रतिमा ।
यथा शुद्धि मनशुद्धि हेतु गुण कीर्तन करूं अतुल महिमा ॥

श्रीमद् भवनवासि के गृह में भासुर जिन मूर्ती स्वयमेव
परम सिद्धगति करें हमारी वंदू उन्हें करूं नित सेव ॥१०॥

इस जग में जितनी प्रतिमा हैं कृत्रिम अकृत्रिम सबको ।
मैं वंदू शिव वैभव हेतु सब जिन चैत्य जिनालय को ॥
व्यंतर के विमान में जिनगृह उनमें अकृत्रिम प्रतिमा ।
संख्यातीत कहीं हैं वंदू दोष नाश के हेतु सदा ॥११॥

ज्योतिष देवों के विमान में अद्भुत संपत् युत जिनगेह ।
स्वयंभुवा प्रतिमा भी अगणित उन्हें नमूं निज वैभव हेतु ॥
सुरपति के नत मुकुटमणि–प्रभ से अभिषेक हुआ जिनका ।
वैमानिक सुर सेवित प्रतिमा सिद्धि हेतु मैं नमूं सदा ॥१२॥

इस विध स्तुति पथातीत अंतर बाहिर श्रीयुत अर्हन् ।
चैत्यों के संकीर्तन से मम सर्वास्रव का हो रोधन ॥
अर्हद्देव महानद उत्तम तीर्थ अलौकिक हैं जग में ।
त्रिभुवन भविजन तीर्थस्नान से पापों का क्षालन करते ॥१३॥

लोकालोक सुतत्व प्रकाशक दिव्यज्ञान जल नित बहता ।
शील रु सद्व्रत विशाल निर्मल, दो तटसे शोभित दिखता ॥
शुक्लध्यानमय राजहंस स्थिर राजत हैं इस नद में ।
मंद्रघोष स्वाध्याय, विविध गुण समिति गुप्ति वालू चमके ॥१४

क्षमादि हैं आवर्त सहस्रों सर्वदयामय कुसुम खिले ।
लता शोभतीं, दुःसह परिषह भंग तरंगित हैं लहरें ॥

अमरेश्वर के नमस्कार से मुकुट मणिप्रभ किरणों से ।
चुंवित चरण सरोरुह भगवन् ! तव शुभ रूप मनोहर है ॥
अन्य देव गुरु तीर्थ उपासक सकल भुवन यह अंध समान ।
उन सबको तव रूप पवित्र करे अरु नेत्र करे अमलान ॥

[बैठकर अंचलिका पढ़ें]

✲ अचलिका ✲

भगवन् चैत्यभक्ति अरु कायोत्सर्ग किया उसमें जो दोप ।
उनकी आलोचन करने को इच्छुक हूँ धर मन संतोप ॥
अधो मध्य अरु उर्ध्वलोक में अकृत्रिम कृत्रिम जिनचैत्य ।
जितने भी हैं, त्रिभुवन के चउविध सुर करे भक्ति से सेव ॥१
भवनवासि व्यंतर ज्योतिप वैमानिक सुर परिवार सहित
दिव्य गंध दिव चूर्णवास से दिव्य न्हवन करते नितप्रति ।
अर्चें पूजें वंदन करते नमस्कार वे करें सतत
मैं भी उन्हें यहीं पर अर्चूं पूजूं वंदूं नमूं सतत ॥
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय होवे बोधि लाभ होवे
सुगतिगमन हो समाधिमरणं मम जिण गुण संपत् होवे ॥

अथ पौर्वाह्णिक देव वंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण स
कर्मक्षयार्थं भावपूजा–वंदनास्तव–समेतं पंचमहागुरु भ
कायोत्सर्गं करोम्यहं ।

[पंचांग नमस्कार करके ३ आवर्त एक शिरोनति
मुक्ति शुक्तिमुद्रा से पूर्ववत् 'सामायिक दंडक' पढ़कर ३ आव

रोनति पूर्वक कायोत्सर्ग (९ जाप्य) करें पुनः साष्टांग नमस्कार
करके, पुनः ३ आवर्त १ शिरोनति कर मुक्ताशुक्तिमुद्रा से "थोस्सामि
स्तव" पढ़कर वंदनामुद्रा से "पंचमहागुरु" भक्ति पढ़ें ।]

❀ पंचगुरु भक्ति ❀

सुरपति नरपति नागइन्द्र मिल तीन छत्र धारें प्रभु पर ।
पंचमहाकल्याणक सुख के स्वामी मंगलमय जिनवर ॥
अनंत दर्शन ज्ञान वीर्य सुख चार चतुष्टय के धारी ।
ऐसे श्री अर्हंत परमगुरु हमें सदा मंगलकारी ।१॥

ध्यान अग्निमय बाण चलाकर कर्मशत्रु को भस्म किये ।
जन्म जरा अरु मरणरूप त्रय नगर जला त्रिपुरारि हुये ॥
प्राप्त किये शाश्वत शिवपुर को सिद्ध निरंजन निर्मद बने ।
ऐसे सिद्धसमूह हमें नित उत्तम ज्ञान प्रदान करें ॥२॥

पंचाचारमयी पंचाग्नि में जो नित तपते रहते ।
द्वादश अंगमयी श्रुतसागर में नित अवगाहन करते ॥
मुक्ति श्री के उत्तम वर हैं ऐसे श्री आचार्य प्रवर ।
महाशील व्रत ज्ञान ध्यान रत देवें हमें मुक्ति सुखकर ॥३॥

यह संसार भयंकर दुखकर घोर महा वन है विकराल ।
दुःखमय सिंह व्याघ्र अति तीक्ष्ण नख अरु दाढ़ सहित विकराल ॥
ऐसे वन में मार्गभ्रष्ट जीवों को मोक्षमार्ग दर्शक ।
हित उपदेशी उपाध्याय गुरु पद मैं वंदन करूँ सतत ॥४॥

विविध संस्कारों से शोभित मंदिर में धोकर निज पाद।
करता हूँ प्रवेश हर्षित हो त्रिभुवनपति आराधन काज॥

[इति प्रक्षालितपादः सन् श्रीविमानं प्रविशेत्]

चतुर्दिक्षु पृथक् क्लृप्त त्र्यावर्तैकशिरोनतिः ।
त्रिःपरित्यानतो जैनगेहमन्तर्विशाम्यहं ॥२॥

चार दिशा में पृथक् पृथक् कर त्रय आवर्त इक शिरोनति।
नमन करूं त्रय प्रदक्षिणा कर जिनगृह में मैं करूं प्रवेश।

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भवतापहारि ।
भव्यात्मनां विभवसंभवभूरिहेतुः ॥
दुग्धाब्धिफेनधवलोज्वलकूटकोटि-।
नद्धध्वजप्रकरराजिविराजमानं ॥३॥

देखा जिनवर भवन मनोहर भवसंताप हरन जग में
भविकजनों को भव विरहित सुख संपत्ति हेतु जग में॥
क्षीरोदधि सम धवलोज्ज्वलध्वज कूट शिखर से शोभित है।
कनक कलश से भूपित जिनगृह राजित शुभ मंगल गृह है॥

[इति त्रिभुवनगुरुभवनं त्रिःपरित्याभिमुखमुपग
मगवन्तमभिवंदेत्]

[उपर्युक्त स्तोत्र को बोलते हुए चैत्यालय की तीन प्रदक्षि
देकर ॐ ह्रीं ह्रं ह्रं निसिहि २ स्वाहा कहते हुए (इत्यंतः प्रविशे
भीतर प्रवेश करें]

भगवान् को नमस्कार करके हाथ धोकर ईर्यापथ शुद्धि करें।
ह्रीं असुजर सुजर स्वाहा। (हस्त प्रक्षालन मंत्रः) इसको बोलकर
हाथ प्रक्षालन करें।

• ईर्यापथशुद्धि •

पडिक्कमामि भंते! इरियावहियाए विराहणाए
अणागुत्ते, अइगमणे, णिग्गमणे, ठाणे, गमणे, चंकमणे,
पाणुग्गमणे, बीजुग्गमणे, हरिदुग्गमणे उच्चार पस्सवण-खेल-
सिंहाण वियडिपइट्ठावणियाए, जे जीवा एइन्दिया वा बेइन्दिया वा
तेइन्दिया वा चउरिंदिया वा पंचिंदिया वा णोल्लिदा वा पेल्लिदा
वा संघट्टिदा वा संघादिदा वा उद्दाविदा वा परिदाविदा वा,
किरिच्छिदा वा, लेस्सिदा वा, छिंदिदा वा, भिंदिदा वा, ठाणदो
वा, ठाणचंकमणदो वा, तस्स उत्तरगुणं, तस्स पायच्छित्तकरणं,
तस्स विसोहिकरणं, जाव अरहंताणं, भयवंताणं णमोक्कारं
पज्जुवासं करेमि ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

हे भगवन्! ईर्यापथिक दोष विशोधन करूं।
प्रतिक्रमण विधि [illegible]

[illegible] हो [illegible] की [illegible]।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] को [illegible]

रखा परस्पर पीड़ित कीना एकत्रित कीना घाता।
ताप दिया, या चूर्ण किया, कूटा, मूर्च्छित कीना, काटा॥
ठहरे चलते फिरते को छिन भिन्न विराधित किया प्रभो।
गुण हेतु प्रायश्चित हेतु उन्हें विशोधन हेतु प्रभो॥
जब तक भगवत् अर्हत् के णवकार मंत्र का जाप्य करूं।
तब तक पाप क्रिया अरु दुश्चरित्र का बिल्कुल त्याग करूं॥

[नौ बार णमोकार मंत्र का जाप्य करें]

• आलोचना •

ईर्यापथे प्रचलिताद्य मया प्रमादा-
देकेन्द्रियप्रमुखजीवनिकायबाधा ॥
निर्वर्तिता यदि भवेदयुगांतरेक्षा ।
मिथ्या तदस्तु दुरितं गुरुभक्तितो मे ॥१॥

ईर्यापथ से गमन में मैंने किया प्रमाद ।
एकेन्द्रिय आदिक सभी जीवों का जो घात ॥
किया यदि चउ हाथ प्रम नहीं भूमि को देख ।
गुरु भक्ति से पाप सब हो मिथ्या मम देव ! ॥

इच्छामि भंते इरियावहियस्स आलोचेउं पुव्वुत्तरदक्खिण पच्छिमचउदिसविदिसासु विहरमाणेण जुगंतरदिट्ठिणा दट्ठव्वा । पमाददोसेण डवडवचरियाए पाणभूदजीव उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

✲ चतुर्विंशतिस्तव ✲

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंत जिणे ।
णरपवरलोयमहिए विहुयरयमले महप्पण्णे ॥
लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे ।
अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो ॥१॥

स्तवन करूं जिनवर तीर्थंकर केवलि अनंत जिन प्रभु का ।
मनुज लोक से पूज्य कर्मरज मल से रहित महात्मन् का ॥
लोकोद्योतक धर्म तीर्थंकर श्री जिनका मैं नमन करूं ।
जिन चउवीस अर्हन्त तथा केवलि गण का गुणगान करूं ॥

[पुनः ३ आवर्त १ शिरोनति करके वंदना मुद्रा से सिद्धभक्ति पढ़ें

✲ सिद्धभक्ति ✲

तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य ।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥१॥

तप से सिद्ध नयों से सिद्ध सुसंयमसिद्ध चरित सिद्धा ।
ज्ञानसिद्ध दर्शन से सिद्ध नमूं सब सिद्धों को शिरसा ॥

इच्छामि भंते ! सिद्धभक्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचे
सम्मणाण–सम्मदंसण–सम्मचारित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्ममुक्काणं
अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं
णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अदीदाणागदवट्टमाण-

[पूर्ववत् यथा स्थान आवर्त, शिरोनति एवं पंचांगनमस्कार पूर्वक "णमो अरहंताणं" इत्यादि सामायिकदंडक तथा "थोस्सामि स्तवन" करके वंदनामुद्रा से नीचे लिखी "चैत्यभक्ति" का पाठ करें]

• चैत्यभक्ति •

कोट्योर्हत्प्रतिमाः शतानि नवतिः पंचोत्तरा विंशतिः ।
पंचाशत्त्रियुता जगत्सु गुणिता लक्षाः सहस्राणि तु ॥
सप्ताग्रापि च विंशतिर्नवशति-द्व्यूनं शतार्धं मता-
स्ता नित्याः पुरतुंग पूर्व-मुखसत्पर्यंकबधाः स्तुवे ॥

नवसौ पचीस कोटि त्रेपन लाख सताइस सहस प्रमाण ।
नवसौ अड़तालिस जिन प्रतिमा शिव सुख हेतु करूं प्रणाम ॥
ज्योतिर्व्यन्तर के गृह में शाश्वत जिन प्रतिमा सख्यातीत ।
पूर्वदिशामुख पर्यंकासन राजें नमूं सदा नत शीश ॥

• अंचलिका •

इच्छामि भंते ! चेइयभत्ति काउस्सग्गो कओतस्सालोचेउं अहलोय-तिरियलोय-उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तिसुवि लोएसु भवणवासिय-वाण वितरजोयिमिय-कप्पवासियन्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेहिं गंधेहिं, दिव्वेहिं अक्खेहिं, दिव्वेहिं पुप्फेहिं, दिव्वेहिं दीवेहिं, दिव्वेहिं धूवेहिं, दिव्वेहिं चुण्णेहिं, दिव्वेहिं वासेहिं दिव्वेहिं ण्हाणेहिं णिच्चकालमच्चंति, पुज्जंति, वंदंति, णमसन्ति चेदिय-महाकल्लाणं करंति । अहमवि इहसंतो तत्थ संताइं णिच्च-

• पंचगुरुभक्ति •

प्रातिहार्यैर्जिनान् सिद्धान् गुणैः सूरीन् स्वमातृभिः ।
पाठकान् विनयैः साधून् योगांगैरष्टभिः स्तुवे ॥ १ ॥

प्रातिहार्य से युत अर्हंतों को अठगुण युत सिद्धों को ।
वंदूं अठ प्रवचनमाता से संयुत श्री आचार्यों को ॥
शिष्यों से युत पाठक गण को अष्ट योग युत साधु को ।
वंदूं पंचमहागुरुवर को त्रिकरण शुचि से मुद मन हो ॥

• अंचलिका •

इच्छामि भंते ! पंचमहागुरुभक्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं । अट्ठमहापाडिहेर-सहियाणं अरहंताणं । अट्ठमहा कम्मविप्पमुक्काणं सिद्धाणं । अट्ठ-पवयणमाउसंजुत्ताणं । आइ रियाणं । आयारादि सुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं । तिरयण गुणपालणरयाणं सव्व-साहूणं । भचीए णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

भगवन् ! पंचमहागुरू भक्ति कायोत्सर्ग ।
करके आलोचन विधि करना चाहूँ सर्व ॥ १ ॥
अष्टमहाशुभ प्रातिहार्य संयुत अर्हंत जिनेश्वर हैं ।
अष्टगुणान्वित ऊर्ध्वलोक मस्तक पर सिद्ध विराज रहें ॥
अठ प्रवचनमाता संयुत हैं श्री आचार्य प्रवर जग में ।
आचारादिक श्रुतज्ञानामृत उपदेशी पाठक गण हैं ॥ २ ॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांति भगवान् जिनेन्द्रः ॥

संपूजक प्रतिपालक जन यतिवर सामान्य तपोधन को ।
देश राष्ट्र पुर नृप के हेतु हे भगवन् ! जिन ! शांति करो ॥

• अंचलिका •

इच्छामि भंते ! शांतिभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सा लोचेउं पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं अट्ठमहापाडिहेर–सहिय. चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं बत्तीसदेविंदमणिमयमउडमत्थय-महियाणं बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजदिअणगारोवगूढाणं थुइसयसहस्सणिलयाणं, उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

हे भगवन् ! श्री शांतिभक्ति का कायोत्सर्ग किया उसके ।
आलोचन करने की इच्छा करना चाहूँ मैं रुचि से ॥
अष्टमहाप्रातिहार्य सहित जो पंचमहाकल्याणकयुत ।
चौंतिसअतिशय विशेष युत बत्तिस देवेन्द्र मुकुट चर्चित ।
हलधर वासुदेव प्रतिचक्री ऋषि मुनि यति अनगार सहित ।
लाखों स्तुति के निलय वृषभ से वीर प्रभू तक महा पुरुष ॥
मंगल महापुरुष तीर्थंकर उन सबको शुभ भक्ति से ।
नित्यकाल मैं अर्चूं पूजूं वंदूं नमूं महामुद से ॥

भगवन् ! समाधि भक्ति अरु कायोत्सर्ग कर लेत।
चाहूँ आलोचन करन दोष विशोधन हेत॥१॥
रत्नत्रय स्वरूप परमात्मा उसका ध्यान समाधि है।
नितप्रति उस समाधि को अर्चूं पूजूं वंदूं प्रणमूं मैं॥
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय हो मम बोधिलाभ होवे।
सुगति गमन हो समाधिमरणं मम जिनगुण संपत होवे॥२॥

[ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआ उसा नमः सर्व शां
कुरु कुरु वषट् स्वाहा] इस मंत्र का पांच बार उच्चारण करें।

* गणधर वलयमंत्र *

ओं ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं, णमो ओहिजिणाणं, णमो
परमोहिजिणाणं, णमो सव्वोहि जिणाणं, णमो अणंतोहिजिणाणं,
णमो कोट्ठबुद्धीणं, णमो बीजबुद्धीणं, णमो पादाणुसारीणं, णमो
संभिण्णसोदाराणं, णमो सयंबुद्धाणं, णमो पत्तेयबुद्धाणं, णमो
बोहियबुद्धाणं, णमो उजुमदीणं, णमो विउलमदीणं, णमो
दसपुव्वीणं, णमोचउदसपुव्वीणं, णमो अट्ठंगमहाणिमि
त्तकुसलाणं, णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं, णमो विज्जाहराणं, णमो
चारणाणं, णमो पण्णसमणाणं, णमो आगासगामीणं, णमो
आसीविसाणं, णमो दिट्ठिविसाणं, णमो उग्गतवाणं, णमो
दित्ततवाणं, णमो तत्तवाणं, णमो महातवाणं, णमो घोरतवा
णमो घोरगुणाणं, णमो घोरपरक्कमाणं, णमो घोरगुणबंभया
णमो आमोसहिपत्ताणं, णमो खेल्लोसहिपत्ताणं, णमो ज

श्रीपादं जिनचंद्रशांतशरणं सद्भक्तिमानेमिते।
भूयस्तापहरस्य देव! भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम्॥

मोहध्वांत के नाशक विश्वप्रकाशी विशद दीप्ति धारी।
सन्मारग प्रतिभासक बुधजन को नित ही मंगलकारी॥
श्रीजिनचंद्र शांतिप्रद भगवन्! तापहरन तव भक्ति किया।
पुनः पुनः तव दर्शन होवे यही याचना करूं सदा॥

❁ इति पूजामुख विधिः ❁

विशेष—

चतुर्दशी के दिन पूजन के मध्य चैत्यभक्ति करके मध्य श्रुत भक्ति का पाठ बोलकर पंचगुरु भक्ति व शांति पाठ व उसकी विधि—

अथ चतुर्दशीपर्व-क्रियायां जिनेन्द्र-महापू समेतं श्री श्रुत भक्ति कायोत्सर्ग करोम्यहम्।

[णमो अरहंताणं............................दुच्चरियं वोस इत्यादि पूर्ववत् विधि करके ६ जाप्य, पुनः थोस्सामि पढ़ कर भक्ति पढ़ें]

• श्रुतभक्ति •

श्रुतमपि जिनवरविहितं गणधररचितं द्व्यनेकभेदस्थम्।
अङ्गांगबाह्यभावितमनंतविषयं नमस्यामि॥

जिनवर कथित, रचित गणधर से श्रुत: अंगांग बाह्य संयुत ।
द्वादशभेद अनेक अनन्त विषययुत वंदूं मैं जिनश्रुत ॥

॥ अंचलिका ॥

इच्छामि भंते ! सुदभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अंगोवंगपइण्णए पाहुडयपरियम्मसुत्तपढमाणिओगपुव्वगयचूलिया सुत्तत्थयथुइधम्मकहाइयं णिच्चकालं अच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइगमणं, समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।

हे भगवन् ! श्रुतभक्ति कायोत्सर्ग किया उसके हेतु ।
आलोचन करना चाहूँ जो अंगोपांग प्रकीर्णक श्रुत ॥
प्राभृतक परिकर्म सूत्र प्रथमानुयोग पूर्वगित ।
चूलिका सूत्र स्तव स्तुति अरु धर्मकथादि सहित ॥
सर्वकाल मैं अर्चूं पूजूं वंदूं नमूं भक्ति युत से ।
[illegible] शुचि ज्ञान ऋद्धि, अक्षय सुख, पाऊं [illegible] मैं ।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय हो मम बोधिलाभ होवे ।
सुगति गमन हो समाधि मरणं मम जिनगुण संपत् होवे ॥

ॐ ह्रीं द्वादशांग श्रुत-स्कंध-देवताभ्यो अर्घं ।

[पुनः पंचगुरु भक्ति आदि]

[अष्टमी के दिन श्रावक पृथक् से निम्नलिखित विधि करें, अथवा यदि पूजा के अंतर्गत ही करना है तो चैत्यभक्ति के अनन्तर श्रुतभक्ति चारित्रभक्ति करके पंचगुरुभक्ति एवं शांति भक्ति करें]

श्रीपादं जिनचंद्रशांतशरणं सद्भक्तिमानेमिते।
भूयस्तापहरस्य देव ! भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥

मोहध्वांत के नाशक विश्वप्रकाशी विशद दीप्ति धारी।
सन्मारग प्रतिभासक बुधजन को नित ही मंगलकारी॥
श्रीजिनचंद्र शांतिप्रद भगवन् ! तापहरन तव भक्ति किया।
पुनः पुनः तव दर्शन होवे यही याचना करूं सदा॥

* इति पूजामुख विधिः *

विशेष—

चतुर्दशी के दिन पूजन के मध्य चैत्यभक्ति करके मध्य में श्रुत भक्ति का पाठ बोलकर पंचगुरु भक्ति व शांति पाठ करें। उसकी विधि—

अथ चतुर्दशीपर्व–क्रियायां जिनेन्द्र–महापूजास्त समेतं श्री श्रुत भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

[णमो अरहंताणं..............................दुच्चरियं वोस्सरामि इत्यादि पूर्ववत् विधि करके ९ जाप्य, पुनः थोस्सामि पढ़ करके श्रुत भक्ति पढ़ें]

• श्रुतभक्ति •

श्रुतमपि जिनवरविहितं गणधररचितं द्व्यनेकभेदस्थम्।
अङ्गांगबाह्यभावितमनंतविषयं नमस्यामि॥

• अष्टमी तिथि में करने योग्य क्रिया •

नमोऽस्तु अष्टमीपर्वक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं सिद्धभक्ति–कायोत्सर्गं करोम्यहं ।

[णमोअरहंताणं .... पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि
९ जाप्य, थोस्सामि इत्यादि पूर्ववत् विधि करें]

• सिद्धभक्ति •

तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य ।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥

तप से सिद्ध नयों से सिद्ध सुसंयमसिद्ध चरित सिद्धा ।
ज्ञान सिद्ध दर्शन से सिद्ध नमूं सब सिद्धों को शिरसा ॥

इच्छामि भंते ! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गो, कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण–सम्मदंसण–सम्मचरित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीदाणागदवट्टमाणकालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

हे भगवन् ! श्री सिद्धभक्ति का कायोत्सर्ग किया उसका आलोचन करना चाहूं जो सम्यग्रत्नत्रय युक्त ।

[णमो अरहंताणं................ १ जाप्य। थोस्सामि स्तव इत्यादि पूर्ववत् विधि करके शांतिभक्ति पढ़ें।]

* शांतिभक्ति *

श्रीमत्पंचमसार्वभौमपदवीं प्रद्युम्न-रूपश्रियं,
प्राप्तः षोडशतीर्थकृत्त्वमखिल,-त्रैलोक्यपूजास्पदं।
यस्तापत्रयशांतितः स्वयमितः शांतिं प्रशांतात्मनां,
शांतिं यच्छतु तं नमामि परमं शांतिं जिनं शांतये॥

श्रीमत्पंचम सार्वभौम पद कामदेव पद पाया है।
तीन लोक में पूजाकारक जो षोडशतीर्थंकर हैं॥
जन्म जरा मृति तीन ताप को शांत किया प्रभु शांत हुये।
परम शांति जिनको मैं वंदूं निजपर शांति हेतु मैं॥

* अंचलिका *

इच्छामि भंते! शांतिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालो
पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं, चउतं
तिसयविसेस संजुत्ताणं, बत्तीसदेविंदमणिमयमउडमत्थयमहि
बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजदिअणगारोवगूढाणं, थुइस
हस्सणिलयाणं उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं, णिच्च
अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्
बोहिलाओ, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ म

* अंचलिका *

इच्छामि भंते ! समाधिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं रयणत्तयसरूवपरमप्पज्झाणलक्खणं समाहिभत्तीये णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

भगवन् ! समाधिभक्ति अरु कायोत्सर्ग कर लेत ।
चाहूं आलोचन करन दोष विशोधन हेत ॥ १ ॥
रत्नत्रय स्वरूप परमात्मा उसका ध्यान समाधि है ।
नितप्रति उस समाधि को अर्चूं पूजूं वंदूं प्रणमूं मैं ॥
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय हो मम बोधिलाभ होवे ।
सुगतिगमन हो समाधि मरणं मम जिनगुण संपत् होवे ॥

अष्टाह्निका पर्व में करने की क्रिया—

नमोऽस्तु नंदीश्वर-पर्वक्रियायां सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं । पूर्वोक्त विधि णमोअरहंताणं............ ९ जाप्य थोस्सामि आदि पढ़कर सिद्धभक्ति का पाठ करें पुनः इसी विधि से "नंदीश्वर भक्ति पंचगुरु भक्ति, शांति भक्ति और समाधि भक्ति पढ़े" ।
श्री वीर निर्वाण के समय में वीर निर्वाण क्रिया करें यथा-

नमोस्तु वीरनिर्वाण-क्रियायां सिद्धभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहं । पूर्वोक्त विधि से सिद्धभक्ति, निर्वाण भक्ति, पंचगु

वैसे तव चरणाम्बुज युग स्तोत्र पढ़े जो मनुज अहो।
तनु नाशक सब विघ्न शीघ्र अति शांत हुये आश्चर्य अहो।

संतप्तोत्तमकांचनक्षितिधर, श्रीस्पर्द्धिगौरद्युते ! ।
पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्, पीडाः प्रयान्ति क्षयं ॥
उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशत,—व्याघातनिष्कासिता ।
नानादेहिविलोचनद्युतिहरा, शीघ्रं यथा शर्वरी ॥३॥

तपे श्रेष्ठ कनकाचल की शोभा से अधिक कांति युत देव ॥
तव पद प्रणमन करते जो पीड़ा उनकी क्षय हो स्वयमेव ॥
उदित रवी की स्फुट किरणों से ताड़ित हो झट निकल भगे।
जैसे नाना प्राणी लोचन द्युतिहर रात्रि शीघ्र भगे ॥

त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजयादत्यन्तरौद्रात्मकान्–
नानाजन्मशतान्तरेषु पुरतो, जीवस्य संसारिणः ॥
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना, कालोग्रदावानला-
न्न स्याच्चेत्तव पादपद्मयुगल—स्तुत्यापगावारणम् ॥४॥

त्रिभुवन जन सब जीत विजयि बन अतिरौद्रात्मक मृत्युराज
भव भव में संसारी जन के सन्मुख धावे अति विकराल ॥
किस विध कौन बचे जन इससे काल उग्र दावानल से।
यदि तव पाद कमल की स्तुति नदी बुझावे नहीं उसे ॥

लोकालोकनिरन्तरप्रवितत-ज्ञानैकमूर्ते ! विभो !
नानारत्नपिनद्धदंडरुचिर-श्वेतातपत्रत्रय ! ॥

भगवन् ! तव चरणद्वय का हो नहीं प्रसादोदय जब तक।
सभी जीवगण प्रायः करके महत् पाप धारें तब तक॥

शांतिं शान्तिजिनेन्द्र ! शांतमनसस्त्वत्पादपद्माश्रयात्।
संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः शांत्यर्थिनः प्राणिनः॥
कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो ! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु।
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः शांत्यष्टकं भक्तितः॥८॥

शांति जिनेश्वर ! शांतचित्त से शांत्यर्थी बहु प्राणीगण।
तव पादाम्बुज का आश्रय ले शांत हुये हैं पृथिवी पर॥
तव पदयुग की शांत्यष्टकयुत स्तुति करते भक्ति से।
मुझ भाक्तिक पर दृष्टि प्रसन्न करो भगवन् ! करुणा करके॥

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम्॥९॥
शशि सम निर्मल वक्त्र शांतिजिन शीलगुण व्रत संयम पात्र।
नमूं जिनोत्तम अंबुजदृग को अष्टशतार्चित लक्षण गात्र॥
पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिंद्र-नरेन्द्रगणैश्च।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः, षोडशतीर्थकरं प्रणमामि॥१०॥
चक्रधरों में पंचमचक्री इन्द्र नरेन्द्र वृंद पूजित।
गण की शांति चहूं षोडश तीर्थंकर नमूं शांतिकर नित॥
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टि-र्दुंदुभिरासनयोजनघोषौ।
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः॥११॥

श्री बाहुबलि स्तुति

जय जय संवत्सर निश्चल तनु जय जय महा तपस्वी हे
जात रूपधर! विश्व हितंकर! जय जय महा मनस्वी हे
नाभिराजके पौत्र मदनतनु पुरुदेवात्मज नमो नमो।
मात सुनंदासुत भरताधिपनुत पादाम्बुज नमो नमो॥१॥

इन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र भक्तिसे घिस घिस शीश प्रणाम करें।
लिखी भालमें कुकर्म रेखा मानों घिस घिस नाश करें।
चित्सुखशांति सुधारस दाता भविजन त्राता नमो नमो।
शिवपथनेता शर्म विधाता मन वच तनसे नमो नमो॥२॥

जो जन भक्ति भावसे प्रभुका गुण संकीर्तन करते हैं।
नर सुर के अभ्युदय भोगकर निश्रेयसको पाते हैं।
मुनि जन हृदयसरोरुहबंधु! भवि कुमुदेंदु! नमो नमो।
भुक्तिमुक्ति फलप्रद! गुण सिंधु! जय जग बंधु! नमो नमो॥३॥

हे दुःखित जन वत्सल! शरणागतप्रतिपालक! बाहुबलि!
त्राहि त्राहि हे करुणासिंधो! पाहि जगत से महाबली!
जय जय मंगलमय लोकोत्तम जय जय शरणभूत जगमें।
जय जय सकल अमंगल दुखहर जय जयवंतो प्रभु जग में॥४॥

जय जय हे जग पूज्य! जिनेश्वर जय जय श्री गोम्मटेश्वर की।
जय जय जन्म मृत्युहर! सुख कर! जय जय योग चक्रेश्वर की।
जय जय हे त्रैलोक्य हितंकर सब जगमें मंगल कीजे।
जय जय मम रत्नत्रय पूर्ति कर जिन गुणसंपद दीजे॥५॥

रामचन्द्र के दो सुत लाड, नृपादिक पंचकरोड़ गिनो।
पावागिरी शिखर से शिवपुर, गये भक्ति से उन्हें नमो॥
उठो भव्य......॥६॥

पांडव तीन द्रविड राजादिक, आठ कोटि मुनि सुरपूजित।
शत्रुंजय गिरि से शिव पाये, नमो सभी को भाव सहित॥
उठो भव्य......॥७॥

वलभद्र सप्त यादव नरेन्द्र, इत्यादिक आठ कोटि परिमित।
गजपंथा गिरि से शिव पहुँचे, भाव भक्ति से वंदों नित॥
उठो भव्य......॥८॥

राम हनूमन सुग्रीव गवगवाख्य, नील महानील यति।
निन्यानवे कोटि मुनि तुंगी-गिरि से शिव गये करो नति॥
उठो भव्य......॥९॥

नंग अनंग कुमर अरु साढ़े पांच, कोटि परिमित मुनिगण।
सोनागिरिवर से निर्वाण गये, उन सबको करो नमन॥
उठो भव्य......॥१०॥

साढ़े पंच कोटि मुनि दशमुख, सुत आदिक रेवा तट से।
मृत्यु जीत शिवकांता पाई, नमों सभी को प्रीति से।
उठो भव्य......॥११॥

जसरथ नृप सुत अरु कलिंग, देश में यतिवर पंचशतक ।
कोटि शिला पर कोटि मुनीश्वर, मुक्ति गये हैं नमो सतत ॥
उठो भव्य ....॥१९॥

पार्श्व जिनेश्वर समवशरण में, वरदत्तादि पंच ऋषिराज ।
मुक्ति हुए रेसिंदी गिरि से, उन्हें नमों भव जलधि जहाज ॥
उठो भव्य..........॥२०॥

जंबू वन से मुक्त हुए, अंतिम जंबूस्वामी उनको ।
और अन्य मुनि जहाँ-जहाँ से, मुक्त हुए वंदों सबको ॥
उठो भव्य..........॥२१।

जिनवर गणधर मुनिगण की, निर्वाण भूमियाँ सदा नमों ।
पंचकल्याणक भूमि तथा, अतिशय युत क्षेत्र सभी प्रणमों ॥
उठो भव्य ....॥२२।

शालिपिष्ट भी शर्करयुत, माधुर्य-स्वादकारी जैसे
पुण्यपुरुष के पदरज से ही, धरा पवित्र हुई वैसे ।
उठो भव्य ....॥२३।

त्रिभुवन के मस्तक पर सिद्ध-शिला पर सिद्ध अनंतानन्त
नमो-नमो त्रिभुवन के सभी-तीर्थ को जिससे हो भव अंत ।
उठो भव्य..........॥२४।

सिद्धक्षेत्र वंदन से नंतानंत, जन्मकृत पाप हरो
"सम्यग्ज्ञानवर्नी" श्रद्धा से, शीघ्र सिद्ध सुख प्राप्त करो ।
उठो भव्य..........॥२५।

उन मंदिर में जिनवर प्रतिमा वंदन करूं सदा शुचि से।
मनः प्रसक्ति हेतु नमूं मैं भव दुख नाश करूं झट से॥

म्बूद्रु मे शाल्मलि शाखिनि द्वौ चैत्यालयौ तौ प्रणमामि नित्यं।
त्रस्थचैत्यानि भवांतकानां संस्तौमि भक्त्या भव दुःखशान्त्यै।८।

जम्बू शाल्मलि दो वृक्षों पर दो जिन चैत्यालय शाश्वत।
उनमें जिनवर की प्रतिमाएं रत्नमयी शोभें नित प्रति॥
भवदुःख अंतक जिनवर के प्रतिविम्ब उन्हें मैं नमूं सदा।
भवदुःख शांति हेतु भक्ति से सतत संस्तवन करूं मुदा॥

रौ पोडशशैले, गजदंते ये चतुप्रभाः जिननिलयाः।
लशैले पड मान्या विदेह जे वक्षारगिरिपु ते पोडश।९।

मेरु सुदर्शन के पोडशजिनगृह गजदंत गिरी के चार।
कुल गिरि के पट् कहे विदेह क्षेत्र के पोडशगिरि वक्षार॥

रूप्याद्रिचतुस्त्रिंशत् तेपु गृहाः जंबूद्रौ शाल्मलिवृक्षे।
एतान् सर्वान् अष्टासप्ततिमान्यान् जिनालयान् प्रणमामि॥१०॥

रजताचल के चौंतीस जिनगृह जंबू शाल्मलि के दो जान।
ये सब अठ्हत्तर चैत्यालय उनको नमूं सदा सुखदान॥

मुनिवंदितपादसरोजयुगं, सुरनायकनागनरेन्द्रनुतं।
अकृतं भुवनत्रयजैनगृहं प्रणमामि मनःशुद्ध्यै सततं॥११॥

मुनिगण वंदित पाद सरोरुह सुरपतिनाग नरेन्द्र नुतं।
त्रिभुवन जिनगृह शाश्वत जितने मनःविशुद्धि हेतु प्रणमन॥

मनुज्ञोत्तर नगपर चउदिश में, चार जिनसदन शोभ रहें।
उनपर दंतिवैरिविष्टरपर, राजित कृति हम नमन करें॥

नंदीश्वरवरद्वीपे, द्वापंचाशज्जिनालयाः शोभन्ते।
नानासुरत्नमणिमय-कनकमयास्तान् नमामि शिरसा सततम्॥१

नंदीश्वरवर द्वीप आठवां, बावन श्रीजिनभवन वहाँ।
मणिमय कनक रजतमय, मनहर प्रतिमा वंदूं शीश नमा॥

तत्र चतुर्दिक्ष्वपि चतु-रंजनगिरिषु निरञ्जनकृतयो भांति।
कर्माञ्जनच्युतसौम्या, नमोऽस्तु ताभ्यो दुरिताञ्जननाशाय॥१

वहीं चतुर्दिक अंजनगिरिमें, कर्मांजनच्युत श्री जिनगेह।
तिनमें नित्य निरंजन प्रतिमा, वंदूं दुरितांजन हर हेत॥

षोडशदधिमुखगिरिषु, षोडशसदनेषु संति सुरनुतप्रतिमाः
मणिकनकादिमयास्ताः, प्रणौमिमोदाद् भवाग्निशान्त्यै शिरसा

दधिमुख पर्वत सोलह तिनपर, सुरनुत चैत्यालय शोभें।
मोहविजयिकी वहां मूर्तियां, वंदूं मैं सुरगण पूजें॥

रतिकरनगद्वात्रिंशत्-तेषु स्मरहरगृहेषु भान्त्यकृतेषु।
रतिपतिविजयिजिनार्चा-स्ताभ्यो भक्त्या नमोऽस्तु कल्मषहान्यै

रतिकराद्रि बत्तीस जहाँ पर, जिन भवनों में जिनप्रतिमा।
मोहतिमिर हर भास्कर जिनकी, वंदन करूं महा महिमा॥

कुंडलाद्रौ चतुर्दिक्-जिनसद्मसु मोहतिमिरघनमार्तंडान्।
मनसिजमदहरजिनवर-बिम्बान् बद्धांजलिश्च नौमि सदाहं॥१

कुंडलगिरि के चतुर्दिशा में, चउ जिनगृह शोभा पाते।
काल विजयिके जिनबिंबों को, वंदन कर भव दुख जाते॥

रुचकवरगिरौ चतुर्दिक्-चतुरनंगजिद्गृहाणि रत्नमयानि।
तेषु विधुतकलिलानां, रूपाणि जिनेशिनां सदा वंदेऽहं ॥१६॥

रुचकगिरी के चतुर्दिक चतु-अनंगजयि जिनमंदिर हैं।
विधुतकर्म श्री जिनबिंबों को, वंदन भावभक्ति कर है॥

मध्यमलोके भान्ति, स्मरजयिचैत्यालया अकृतका रम्याः।
संख्याष्टापंचाशच्चतुःशतमता भवंतु मेऽमितसिद्धयै ॥१७॥

मध्यलोक के चार शतक, अट्ठावन अकृत्रिम मंदिर।
स्मरविजयि जिनकी आकृतियां, वंदूं मैं मस्तक नत कर॥

व्यंतरनिकायमध्ये, व्यतीतसंख्या जिनेन्द्रनिलयास्तेषु।
झषकेतुविजयिजिनपति-प्रतिमा अनुपमसुखप्रदाः प्रणमामि ।१८।

व्यंतरवासी देवों में व्यतीत, संख्या जिनराज भवन।
मीन पताका विजयी जिनकी, प्रतिमा अनुपम करूं नमन॥

ज्योतिर्लोकेऽगणिता, भासंते भासमानसुरनुतनिलयाः।
तेषु जिनसूर्यबिम्बान्, रविशशिशोभातिशायिनः संस्तौमि१९

ज्योतिष सुर के अगणित जिनगृह में चैत्यालय भास रहे।
रवि शशि दीप्ति विजित तेजोमय, जिन प्रतिमा की स्तुति कहें॥

ऊर्ध्वलोकेषु भान्ति, जिनसदनानि च सुरेन्द्रभक्तिनुतानि।
तेषु भवजयिच्छायाः, कंठीरवपीठास्थिताश्च ता नमामि ॥२०॥

लांतवयुगे पंचाशत्–सहस्रनिलयेषु दंतिरिपुपीठेषु ।
कालविजयिजिनकृतयस्तास्त्रेधा संस्तवीमि भक्त्या सततम् ।२६।

लांतव युगलमें सहस पचास, जिनालयों में शोभ रहीं ।
काल विजयि जिनवर की प्रतिमा, वंदूं सुर मन मोह रहीं ॥

शुक्रयुगे भवनेषु च चत्वारिंशत्सहस्रसंख्यमितेषु ।
राजन्ते कन्तुजयिच्छायास्ताभ्यो नमो भवान्मां पांतु ।।२७।।

शुक्र युगल स्वर्गों में चालिस हजार जिनगृह शोभ रहे ।
उनमें कंतुविजयि जिनबिंबों को वंदत शिवसौख्य लहे ॥

शतारयुगले सद्मसु, सहस्रषट्स्वपि मोहविजयिसम्राजां ।
दिनकरकरप्रभाधिक–प्रतिमानां वंदनां सदा कुर्वेऽहम् ।।२८।।

शतार युग स्वर्गों में श्री जिन, भवन छह सहस तिनमें हैं ।
दिनकर किरण प्रभाधिक सुन्दर, जिनबिंबों को वंदूं मैं ॥

आनतप्राणतयुगले, तथारणाच्युतयुगे च सप्तशतानि ।
त्रिभुवननुततीर्थेशां, गृहाणि मूर्तीश्च नौमि शिरसा सततम् ।२९।

आनत प्राणत आरण अच्युत, वहाँ सातशत भवन कहें ।
तिनमें त्रिभुवन नुत तीर्थंकर की प्रतिकृति हम नमन करें ॥

एकादशोत्तरशतान्यधोग्रैवेयकेषु च त्रिषु भवनानि ।
तेषुमदनमदमर्दक–प्रतिकृतयस्ता भजामि भवभयशान्त्यै ।३०।

तीन अधोग्रैवेयक में इक–सौ ग्यारह जिन भवन नमूं ।
वहाँ मदनमदमर्दन जिन प्रतिमा को वंदूं पाप वमूं ॥

आठ कोटि छप्पन सुलक्ष, सत्तानवे हजार चार शतक।
इक्यासी जिनगृह अकृत्रिम, मनवचतन से नमूं सतत॥

अभिषेकप्रेक्षागृह–क्रीडनसंगीतनाटयलोकगृहयुक्ताः।
रत्नमयवेदिमंडप–मंगलघटधूपघटसुमणिमालाद्यैः॥३७॥

अभिषेक प्रेक्षागृह क्रीडन, संगीत नाटक लोकगृह।
रत्नखचित वेदि मंडपमणि, मंगलघट और धूपसुघट॥

ध्वजतोरणघंटास्वन–भृंगारप्रभृतिमंगलाष्टकैर्भान्ति।
प्राकारत्रयमानस्तंभस्तूपैर्वनानि परितश्च युताः॥३८॥

मणिमाला ध्वज तोरण शोभित, घंटा किंकणि ध्वनीसहित।
शालत्रय मानस्तंभ–स्तूपादि उपवनों से वेष्टित॥

त्रिशतोत्तुंगचतुःशतदीर्घद्विशतविस्तृताश्च क्रोशैः प्रमिताः।
भव्यात्मकलिलविलया, जिनालयाः स्युर्विचित्रशोभानिलयाः।३

उत्तमप्रमाणमेतत्, तस्यार्धं मध्यमजिनपतिनिलयानाम्।
जघन्यनिलये वहवो, भेदाः सन्त्यागमे यथायोग्यं च॥४०।

इत्यादि विविध अनुपमवैभव–युत चैत्यालय शोभा पावे।
भव्य जनोंका पाप दूर कर विचित्र महिमा बतलावे॥
कोश चारसौ लंबे दो सौ चौड़े, ऊँचे तीन शतक।
जिनगृह इनके अर्ध–मध्य का, जघन्य मिति के भेद विविध॥

तत्र धनुःपंचशतैस्तुंगाः प्रतिमा अकृत्रिमा उत्कृष्टे–।
ष्वपरेषु यथायोग्यं प्रतिग्रहमष्टोत्तरशतमिताः प्रतिमाश्च।४१।

प्रति जिनगृहमें इकसौ आठप्रम, हस्तदोसहस ऊंचाई।
मध्यम लघु जिनगृहमें प्रतिमा, यथायोग्य परिमाण कहीं॥

गर्भगृहेषु तथा जिन-पार्श्वे चमरिरुहहस्तयक्षमूर्तयः।
श्रीदेवीश्रुतदेवी-सर्वाण्हसनत्कुमारकृतयश्च स्युः ॥४२॥

गर्भालय में जिनवर सन्निधि, यक्ष मूर्तियां चामरयुत।
श्री देवी श्रुतदेवी सानत्कुमार, अरु सर्वाण्ह यक्ष॥

अष्टप्रातिहार्यशोभित-गंधकुटीगतसिंहविष्टरे प्रतिमाः।
भ्राजन्ते तत्र सदा, ता भवाब्धेस्तितीर्षया प्रणमामि ॥४३॥

अष्टमंगल अठ प्रातिहार्ययुत, गंधकुटीमें शोभित हैं।
कर्मजयी जिन प्रतिमा वंदूं, सुरनर मुनिगण वंदित हैं॥

नवशतपंचविंशति-कोट्यो लक्षास्त्रयोत्तरपंचाशच्च।
सप्तविंशतिसहस्राण्यष्टचत्वारिंशदधिकनवशतानि च ॥४४॥

नवसौ पचीस कोटि त्रेपन, लाख सताइस सहस प्रमाण।
नवसौ अड़तालिस जिन प्रतिमा, शिवसुख हेतु करूं प्रणाम॥

अकृतानि च जिनरूपाण्येतावंत्येव गण्यतामुपयांति।
ज्योतिर्व्यंतरधामसु, संख्यातीतानि सन्ति चान्यत्रापि ॥४

अकृत्रिम जिन प्रतिमा इतनी, ही संख्या में आती हैं।
ज्योतिर्व्यंतर भवनोंमें ये संख्यातीत कहाती हैं॥

मानस्तंभेषु तथा, चैत्यसिद्धार्थतरुषु च कांचनाद्रिषु च
विद्यंते यत्रापि च, प्रतिमाः सर्वाश्च नौमि शिरसा मोदात्।

मानस्तंभों में तथा चैत्य, सिद्धार्थ वृक्ष कांचन गिरिपर।
और जहाँ भी बिंब राजते, नमूं सदा मैं अंजलि कर॥

गंगाप्रपातकुंडे, श्रीदेव्यः सौधतले जटामुकुटयुतां।
जिनमूर्तिं वंदे यां, स्नपयंतीव पतति हिमगिरेर्गंगा॥४७॥

गंगा प्रपात कुन्डमें गंगादेवी, के गृहकी छत पर।
जटाजूट के मुकुट सहित जिन, प्रतिमा वंदूं पातक हर॥
हिमगिरिसे पड़ती गंगा वहाँ, करती हुई अभिषेक महा।
इसीलिये लौकिक जनने उस, गंगा को भी पूज्य कहा॥

जिनसमवसृतौ च तथा, मानस्तंभेषु चैत्यसिद्धार्थतरुषु।
प्रतिमाश्च गंधकुट्यां, साक्षाद् देवाधिदेवमहमभिवंदे॥४८॥

जिनवर समवसरणमें मानस्तंभ चैत्य सिद्धार्थ तरू।
इनमें प्रतिमा नमूं गंधकुटिमें, साक्षात प्रभु दर्श करूं॥

जंबूधातकिद्वीपे, चार्धपुष्करे कृता मनुजराजाद्यैः।
सुरनरवंदितनिलयाः, स्वजन्ममरणोपशांतये वंदेऽहं॥४९॥

जम्बूधातकि पुष्करार्ध ढाई, द्वीपों में जिनमंदिर।
मनुजचक्रवर्त्यादिक निर्मापित कृत्रिम वंदूं अघहर॥

भरतैरावतदशसु च, षष्ट्युत्तरशतविदेहक्षेत्रेष्वपि।
सप्ततिशततीर्थंकरान्, द्वादशगणपूजितान् प्रवंदे मोदात्॥५०॥

दश भरतैरावत विदेह में, इकसौ साठ नगरियों के।
इकसौ सत्तर धर्मतीर्थंकर वंदूं त्रिकरण शुचि करके॥

पंचकल्याणपूता, भुवः प्रसिद्धा जिनेशिनामिह लोके ।
तास्सर्वाः संस्तौमि च, पंचपरावर्तनात् प्रमोक्षो भूयात् ।।५६।

पंचकल्याणक से पवित्र सब, क्षेत्र वंदना करूं सदा।
पंचमगति की शीघ्र प्राप्ति हो, भव दुःख फिर नहिं पाऊं कदा ।।

अतिशयक्षेत्राणि तथा, लोके ख्यातिमवापुरतिशयतगुणतः ।
अतिशयपुण्यहेतो-र्नमाम्यजस्रं मनः समाधिर्मेऽस्तु ।।५७।

अतिशय क्षेत्र सभी मैं वंदूं, अतिशय गुणसे जो हैं सिद्ध ।
सातिशय पुण्य हेतु भविजन को मुनिगण को हो ध्यान सु सिद्ध ।।

गोम्मटदेवं वंदे, यस्य प्रसादादकृत्रिमा जिनप्रतिमाः ।
स्तौमि मुदा भक्त्या, तस्मिन् मे भवभवे स्थिरा भक्तिःस्यात् ।५८

गोम्मटदेव सदा वंदूं जिनके दर्शन से भक्ति जगी।
अकृत्रिम जिन बिंब दर्श की तथा तीव्र रुचि स्तवन की ।।

त्रैलोक्यमूर्ध्नि पंच-चत्वारिंशत्सुलक्षयोजनप्रमितौ ।
सिद्धशिलायां संस्थित-भूतभवद्भाविसर्वसिद्धांस्तौमि ।।५९।।

त्रिलोक मस्तक पर पैंतालिस, लक्ष सुयोजन सिद्ध शिला।
भूतभवद्भावी अनंत सब, सिद्ध नमूं मन कमल खिला ।।

मृत्युंजयिनां प्रतिमाः कृत्रिमास्तथा च संति यावन्त्योऽपि च।
प्रतिमा अकृत्रिमा, जगत्त्रये नंनमीमि तास्ता मुक्त्यै ।।६०।।

मृत्युंजयिकी प्रतिमा कृत्रिम तथा अकृत्रिम अप्रतिम हैं।
भवनत्रय में जितनी भी, उनको मम शिरसा वंदन है ।।

सिद्धों को कर नमस्कार, सम्मेदगिरीन्द्र स्तवन करूं।
सिद्धिभूमि के वंदन से कट्ठ, कर्मकाष्ठ को दहन करूं॥
बीस कूट पर बीस जिनेश्वर और असंख्य महामुनिगण।
शुक्लध्यान से कर्म नाशकर, सिद्धवधू को किया वरण॥

अनुष्टुपछन्दः

कूटे सिद्धवराभिख्येऽजितनाथः शिवं ययौ।
सहस्रमुनिभिः सार्धं, वन्दे भक्त्या शिवाप्तये॥ ३॥

आर्यास्कंधछन्दः

तत्कूटे चैकार्बुद-चतुरशीतिकोटिपंचचत्वारिंशत्।
लक्षप्रमिता मुनयो, दग्ध्वा कर्माणि मुक्तिमापुर्योगात्॥४॥

अनुष्टुप्

मनसा वपुसा वाचा, संततं भक्तिभावतः।
तान् सुसिद्धान् नमस्यामि, स्वकर्ममलहानये॥५॥

हिंदी

कूटसिद्धवर से श्री अजितप्रभु सहस्र मुनियों के साथ।
भवसमुद्र से पार हुये हैं वंदन करूं नमाकर माथ॥
मुनिगण एक अरब चौरासी, कोटि तथा पैंतालीस लक्ष।
इसी कूट पर कर्मनाश कर, मोक्ष गये वंदूं मैं नित॥

अनुष्टुप्

धवलदत्तकूटे श्री-संभवो कर्महानितः।
सहस्रमुनियुङ् मोक्ष-राज्यं प्रापन्नमाम्यहम् ..६..

कूटेऽविचलनाम्नि श्रीसुमतिः सुमतिप्रदः ।
सहस्रयोगियुक्सिद्धिं, ययौ सर्वान् नमाम्यहम् ॥१२॥

तस्मिन्नेकार्बुदं चतु–रशीतिकोटिचतुर्दशलक्षप्रमिताः ।
सप्तशतैकाशीतियुता मुनीन्द्राः शाश्वतसौख्यमवापुः ॥१३॥

संसाराम्बुधिमुत्तीर्यो चारयितुं परान् क्षमाः ।
नमस्करोमि भक्त्या तान्, सिद्धान् स्वात्मोपलब्धये ॥१४॥

सुमतिनाथ जिन सहस्रमुनि सह, अविचल नाम कूट पर से ।
कामदर्प हर मुक्तिधाम पर, पहुँचे वंदूं प्रीति से ॥
उसी कूट से एक अरब चौरासी, कोटि चतुर्दश लक्ष ।
सात शतक इक्यासी यतिगण, मुक्त हुये मैं नमूं सतत ॥

मोहनकूटतः पद्म–प्रभो मोहद्विपो जयी ।
सहस्रमुनियुङ्मोक्षं–ययौ सर्वांस्तवीमि तान् ॥१५॥

तदनु नवकोटिकोटयः, सप्ताशीतिलक्षकाः सहस्राणि स्युः ।
त्रिचत्वारिंशच्च तथा, सप्तशतसप्तविंशतिमिताः सिद्धाः ।१६।

घात्यघातिविघाताय, कर्मविजयिनश्च तान् ।
सर्वान्सिद्धान्नमस्कुर्वे, तत्कूटं च बुधैर्नुतम् ॥१७॥

मोहनकूट से श्री पद्मप्रभ, सहस्रमुनि सह शिव पाये ।
जन्म मरण दुख नाश हेतु हम, नमन करें शिवपुर जायें ॥
कोटि निन्यानवे लक्ष सत्यासी, सहस तेतालिस सात शतक ।

नमोऽस्तु गतकर्मणे सकलभव्यसंतोषिणे ।
नमोऽस्तु जिनपार्श्व ! ते सकलमोहसंहारिणे ॥८॥

नमोऽस्तु तुमको जन्म रहित भवसागर के शोषणकारी।
नमोऽस्तु तुमको मृत्यु रहित सबको सुखमयपोषणकारी॥
नमोऽस्तु तुमको कर्म रहित सब जन को सन्तोषित करते।
नमोऽस्तु तुमको हे पारसजिन ! सब जन मोह नाश करते॥८॥

हिनस्तु विधिभूभृतां मम समस्तसंतापहृत् ।
पिनष्टु ममसंकटं विविधकर्मपाकोदितं ॥
लुनातु भवबीजतः विविधरागदुःखांकुरान् ।
पुनातु भवपंकतःजिनप ! मां पवित्रः पुमान् ॥९॥

जग संतापहरन मेरे सब कर्माचल को चूर करो।
विविधकर्म के उदय जनित मम भव संकट को चूर्ण करो॥
जन्म बीज से विविध रागमय दुःखांकुर उन्मूल करो।
जिन ! पवित्र ! प्रभु भव कीचड़ से मुझे निकाल पवित्र करो॥९॥

त्वदीयगुणरत्नराशि जलधेर्गृहीत्वा गुणान् ।
अनन्तजनतात्वदीयसदृशं पदंप्राप्नुयात् ॥
तथापि गुणलेशमात्रमपि न व्ययं प्राप्तवान् ।
ततो हि गुणसागर ! त्रिभुवनैकनाथो महान् ॥१०॥

तव गुण रत्नसिंधु से भगवन् ! अनंतगुण को लेकर के।
हे प्रभु ! अनंतभविजन तुम सदृश शिवपद को पा जाते।

फिर भी गुण का लेश मात्र भी नहिं कम होता तव गुण में।
हे त्रिभुवनपति । आप अतः अनुपम अनंत गुण सागर हैं ॥ १० ॥

जिनेन्द्र ! तवभक्तिभारवशतः फणी धारयन् ।
फणातपनिवारणं महति कष्टकाले त्वयि ॥
सुमेरुहृदयो जिनस्त्वदुपकारि नो तस्य तत् ।
सुखाय भुवनैकबोधशुचिकेवलं त्वंश्रितः ॥११॥

हे जिन । तेरी भक्ति भारवश से धरणेन्द्र झटिति आकर ।
तव उपसर्ग काल में शिर पर फण को छत्र किया सुखकर ॥
मेरुहृदय प्रभु । तव उपकारी नहिं उनही को है सुखकर ॥
प्रभु को त्रिभुवन सूर्य ज्ञानकैवल्य प्राप्त हो गया प्रखर ॥ ११ ॥

नमोऽस्तुजिनसूर्य ! विश्वनुत ! विश्वतत्वज्ञ ! ते ।
नमोऽस्तु जिनपार्श्वचंद्र ! कुमुदैकबंधो ! प्रभो ॥
विधेहि करुणांबुधे ! मयि कृपां भवात् पाहि च ।
पुनीहि भगवंस्त्वमेव शरणागतं मां त्वरं ॥१२॥

नमोऽस्तु तुमको हे जिन भास्कर । जगनुत । विश्वतत्वज्ञानी ।
नमोऽस्तु तुमको हे जिन पारसचन्द्र । कुमुद बंधो स्वामी ॥
करुणाहृद् ! मुझ पर करुणा करिये भव से रक्षा करिये ।
हे भगवन् । शरणागत मुझको आप हि झट पवित्र करिये ॥१२॥

पार्श्वनाथ ! स्तवीमि त्वां भक्त्या सिद्ध्यै त्रिशुद्धितः ।
चतुर्ज्ञानमतिक्रांतपंचमज्ञानलब्धये ॥१३॥

हे जिन पार्श्व प्रभो ! भक्ति से मन वच तन की शुद्धि से।
सकल सिद्धि अरु मुक्ति के लिए करूँ तुम्हारी संस्तुति मैं॥
चार ज्ञान से रहित पाँचवें ज्ञान प्राप्ति के लिए नमूं।
मम अ "ज्ञानमती" को हरिये पंचमगति को शीघ्र गमूं॥१३

"समाधि भक्तिः"

स्वात्माभिमुखसंवित्तिलक्षणं श्रुतचक्षुषा।
पश्यन्पश्यामि देव ! त्वां केवलज्ञानचक्षुषा ॥१॥

स्वात्मरूप के अभिमुख संवेदन को श्रुतदृग् से लखकर।
भगवन् ! तुमको केवलज्ञान चक्षु से देखूं झट मनहर॥

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः,
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम्।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे,
संपद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥२॥

शास्त्रों का अभ्यास, जिनेश्वर नमन सदा सज्जन संगति।
सच्चरित्रजन के गुण गाऊं, दोष कथन में मौन सतत॥
सबसे प्रिय हित वचन कहूँ निज आतम तत्त्व को नित भाऊं।
यावत् मुक्ति मिले तावत् भव भव में इन सबको पाऊं॥

जनमार्गरुचिरन्यमार्गनिर्वेगता जिनगुणस्तुतौ मतिः।
निष्कलंकविमलोक्तिभावनाः संभवन्तु मम जन्मजन्मनि ॥३

गुरुमूले यतिनिचिते चैत्यसिद्धांतवार्धिसद्घोषे ।
मम भवतु जन्मजन्मनि सन्यसनसमन्वितं मरणं ॥४॥

जैनमार्ग में रुचि हो अन्यमार्ग निर्वेग हो भव भव में।
निष्कलंक शुचि विमल भाव हों मति हो जिनगुण स्तुति में ।
गुरुपदमूल में, यतिगण हों अरु चैत्यनिकट आगम सद्घोष ।
होवे जन्म जन्म में मम सन्यासमरण यह भाव जिनेश ॥

जन्मजन्मकृतं पापं जन्मकोटिसमार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरामूलं हन्यते जिनवंदनात् ॥५॥

जन्म जन्म कृत पाप महत् अरु जन्म करोड़ों में अर्जित ।
जन्म जरा मृत्यु के जड़ वे जिन वंदन से होते नष्ट ॥

आबाल्याज्जिनदेवदेव ! भवतः श्रीपादयोः सेवया ।
सेवासक्तविनेयकल्पलतया कालोद्ययावद्गतः ॥
त्वां तस्याः फलमर्थये तदधुना प्राणप्रयाणक्षणे ।
त्वन्नामप्रतिबद्धवर्णपठने कण्ठोऽस्त्वकुण्ठो मम ॥६॥

बचपन से अबतक जिनदेवदेव ! तव पाद कमल युग की ।
सेवा कल्पलता सम मैंने की है भक्तिभाव धर ही ॥
अब उसका फल मांगूं भगवन् ! प्राण प्रयाण समय मेरे ।
तव शुभ नाम मंत्र पढ़ने में कंठ अकुंठित बना रहे ॥

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनं ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ॥७॥

तव चरणाम्बुज मुझ मन में मुझ मन तव लीन चरण युग में ।
तावत् रहे जिनेश्वर ! यावत् मोक्ष प्राप्ति नहिं हो जग में ॥

याचेहं याचेहं जिन ! तव चरणारविन्दयोर्भक्ति ।
याचेहं याचेहं पुनरपि तामेव तामेव ॥ १८ ॥

तव चरणाम्बुज की भक्ति को जिन ! मैं याचूं मैं याचूं ।
पुनः पुनः उस ही भक्ति की हे प्रभु ! याचन करता हूँ ॥

विघ्नौघाः प्रलयं यांति शाकिनीभूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनश्वरे ॥ १९ ॥

विघ्न समूह प्रलय हो जाने शाकिनि भूत पिशाच सभी ।
श्री जिनस्तव करने से ही विष निर्विष होता झट ही ॥

"अंचलिका"

इच्छामि भंते ! समाहिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, रयणत्तयसरूवपरमप्पज्झाणलक्खणं समाहिभत्तीये णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

* दोहा *

भगवन् ! समाधिभक्ति अरु कायोत्सर्ग कर लेत ।
चाहूं आलोचन करन दोष विशोधन हेत ॥ १ ॥
रत्नत्रय स्वरूप परमात्मा उसका ध्यान समाधि है ।
नितप्रति उस समाधि को अर्चूं पूजूं वंदूं नमूं उसे ॥
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय हो मम बोधि लाभ होवे ।
सुगतिगमन हो समाधिमरण मम जिनगुण संपत होवे ॥ २ ॥

★

राष्टक स्तोत्र

(पृथ्वी छंदः)

जयेति जय वीर ! धीर ! भगवन् ! महावीर ! भो !,
मुनीन्द्रहृदयाब्जसूर्य ! भविकौमदीचंद्रमः !
सुमेरुकृतजन्मकालसवनं सुलब्धं त्वया,
नमोऽस्तु भगवन् ! नमोऽस्तु जिनवर्धमानाय ते ॥१॥

शशांकधवलोज्ज्वलान् तव गुणान गृणन् शुद्धधीः ।
महर्षिरपि नो प्रभुः पुनरहं कथं शक्यनुयाम् ॥
मनागपि तव स्तवः कटुक कर्महान्यै ततः ।
नमोऽस्तु जिनचंद्र ! ते सकलतापविच्छित्तये ॥२॥

अनन्तभवसंकटे ज्वलितदुःखदावानले,
विचित्रजनसंकुले महति भीकरे संसृतौ ।
भ्रमंति जिन ! देहिनो विविधकर्मपाकोदयात्,
त एव खलु यांति भक्तिवशतः सुसौख्यास्पदं ॥३॥

त्रिलोकविहरद्गिलत्सकलदेहिनं भीतिदं,
मृगेन्द्रमिव संमुखं खलु विलोक्य भीमं यमं ।
बिभेति न हि भक्तिकस्तव भवेद्धि मृत्युंजयः,
नमोऽस्तु मुतिदानये मदनजिच्च मृत्युंजय ! ॥४॥

त्वयैव सकलं जगद् युगपदंजसा ज्ञायते,
अनन्तगुणपर्ययैरखिल - मगवमालोक्यते ।
सुतत्त्वनयसप्तभंगवचनांबुराशौ च ते,
निमज्जनविधिं करोमि यदि चात्मनः शुद्धये ॥५॥

(तिलक लगानेका श्लोक)

सौगंध्यसंगतमधुव्रतझङ्कृतेन,
संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ ।
आरोपयामि विवुधेश्वरवृन्दवन्द्य—
पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानाम् ॥ ३ ॥

(भूमि प्रक्षालन का श्लोक)

ये संति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता,
नागा प्रभूतबलदर्पयुता भुवोऽधः ।
संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा ॥

(पीठ प्रक्षालन का श्लोक)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम् ।
अत्युद्यमुद्यतमहं जिनपादपीठं,
प्रक्षालयामि भवसंभवतापहारि ॥ ५ ॥
ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा ॥ ५ ॥

(पीठ पर श्रीकार लेखन)

श्रीशारदासुमुखनिर्गतबीजवर्णं
श्रीमंगलीकवरसर्वजनस्य नित्यं ।

ओं आं क्रौं ह्रीं धरणेंद्र आगच्छ आगच्छ धरणेंद्राय स्वाः
ओं आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ आगच्छ सोमाय स्वाहा

नाथ ! त्रिलोकमहिताय दश प्रकार ।
धर्माम्बुवृष्टिपरिषिक्तजगत्त्रयाय ।
अर्घ महार्घगुणरत्नमहार्णवाय ।
तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विशदाक्षतैश्च ।।६।।

ओं ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालकेभ्यो इदं अर्घं पाद्यं गंधं दं
बलि स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां २

(क्षेत्रपाल को अर्घ)

भो क्षेत्रपाल ! जिनपः प्रतिमांकपाल,
दंष्ट्रा कराल जिनशासनरक्षपाल ।।
तैलादिजन्म गुडचन्दनपुष्पधूपै—
र्भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वरयज्ञकाले ।।
विमलसलिलधारामोदगन्धाक्षतोघैः,
प्रसवकुलनिवेद्यै र्दीपधूपैः फलौघैः ।
पटहपटुतरोघैः वस्त्रसद्भूषणौघैः
जिनपतिपदभक्त्या ब्रह्मणं प्रार्चयामि ।।१०

ओं आं क्रौं अत्रस्थ विजयभद्र—वीरभद्र—माणिभद्र—
जित—पंचक्षेत्रपालाः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं बलिं
अक्षतं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति

दिक्पाल और क्षेत्रपालको पुष्पाञ्जली)

यद्वादिसमयेषु यदीय कीर्तिः,
...... सुराः प्रमदभारनता स्तुवन्ति ।
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्धया
पुष्पांजलिं मलयजाद्रिमुपाक्षिपेऽहम् ॥११॥

इति पुष्पाञ्जलिः क्षिपेत् ॥११॥

(कलशस्थापन और कलशों में जलधार देना)

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरूप्य—
ताम्रारकूटघटितान् पयसा सुपूर्णान् ।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्
संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकांते ॥१२॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिञ्छ केशरी पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधिशुद्धजल सुवर्णघटं प्रक्षालितं परिपूरितं सुगन्धपुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदक पवित्रं कुरु कुरु झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा ॥

(अभिषेक के लिये प्रतिमाजी को पधराना)

ओं आं क्रौं ह्रीं धरणेंद्र आगच्छ आगच्छ धरणेंद्राय स्वाहा । ९ ।
ओं आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ आगच्छ सोमाय स्वाहा । १० ।

नाथ ! त्रिलोकमहिताय दश प्रकार ।
धर्माम्बुवृष्टिपरिपिक्तजगत्त्रयाय ।
अर्घ महार्घगुणरत्नमहार्णवाय ।
तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विशदाक्षतैश्च ॥९॥

ओं ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालकेभ्यो इदं अर्घं पाद्य गंधं दीपं धूपं च[रुं] वलि स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां २ स्वाहा ।[९]

(क्षेत्रपाल को अर्घ)

भो क्षेत्रपाल ! जिनपः प्रतिमांकपाल,
दंष्ट्रा कराल जिनशासनरक्षपाल ॥
तैलादिजन्म गुडचन्दनपुष्पधूपै—
र्भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वरयज्ञकाले ॥
विमलसलिलधारामोदगन्धाक्षतोघैः,
प्रसवकुलनिवेद्यै र्दीपधूपैः फलौघैः ।
पटहपटुतरोघैः वस्त्रसदभूषणौघैः
जिनपतिपदभक्त्या ब्रह्मणं प्रार्चयामि ॥१०॥

ओं आं क्रों अत्रस्थ विजयभद्र—वीरभद्र—माणिभद्र—भैरवापर[ा]जित—पंचक्षेत्रपालाः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं वलि स्वस्ति[कं] अक्षतं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा ।

(दिक्पाल और क्षेत्रपालको पुष्पाञ्जली)

जन्मोत्सवादिसमयेषु यदीय कीर्तिः,
सेन्द्राः सुराः प्रमदभारनता स्तुवन्ति ।
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्धया
पुष्पांजलिं मलयजाद्रिमुपाक्षिपेऽहम् ॥११॥

इति पुष्पाञ्जलिः क्षिपेत् ॥११॥

(कलशस्थापन और कलशों में जलधार देना)

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरूप्य—
ताम्रारकूटघटितान् पयसा सुपूर्णान् ।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्
संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकांते ॥१२॥

ॉं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म
ञ्छ केशरी पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या
रिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला
रक्तोदा क्षीराम्भोनिधिशुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षालितं परिपूरित
गन्धपुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झ्रौं झ्रौं वं मं
तं पं द्रां द्रीं अ सि आ उसा नमः स्वाहा ॥

(अभिषेक के लिये प्रतिमाजी को अर्घ चढ़ाना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥१३॥
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोषरहिताय
षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घपद प्राप्तये अर्घं

(विम्बस्थापना)

यं पांडुकामलशिलागतमादिदेव—
मस्नापयन् सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि ।
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः
संभावयामि पुर एव तदीयविम्बम् ॥१४॥

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा

(मुद्रिकास्वीकार)

प्रत्युप्तनीलकुलिशोपलपद्मराग—
निर्यत्करप्रकरवद्धसुरेन्द्रचापम् ।
जैनाभिषेकसमयेऽङ्गुलिपर्वमूले ।
रत्नाङ्गुलीयकमहं विनिवेशयामि ॥१५॥

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मुद्रिकाधारण

(जलाभिषेक १)

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटिसंलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिम्
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टैर्भक्त्या जलैर्जिनपतिंवहुधाभिषिञ्चे॥१

मंत्र—(१) ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय अ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

मंत्र (२)—ओं ह्रीं श्रीमत भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानां चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्य खंडे .... देशे .... नाम नगरे एतद् .... जिन चैत्यालये सं .... मासोत्तम मासे .... पक्षे तिथौ ...... वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनि–आर्यिका–श्रावकश्राविकाणाम् सकल कर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा । इति जलस्नपनम् ।

नोट—उपरोक्त दोनों मंत्रों में से कोई एक मंत्र बोलना चाहिये ।

अर्घ—उदक चंदन········अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(शर्करारसाभिषेक २)

भुक्त्यंगनानमंविकीर्यमाणैः पिष्टार्थकर्पूररजोविलासैः ।
माधुर्यधुर्यैवरशर्करौघैर्भक्त्या जिनस्य संस्नपनं करोमि ॥

मंत्र—ओं ह्रीं············इति शर्करास्नपनम् ।

अर्घ— उदकचन्दन····· अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

भक्त्या ललाटतटदेशनिवेशितोच्चैः ।
हस्तैश्च्युता सुरवरासुरमर्त्यनाथैः ॥
तत्कालपीलितमहेक्षुरसस्य धारा ।
सद्यः पुनातु जिनबिम्बगतैव युष्मान् ॥१८॥

मंत्र—ओं ह्रीं········इति इक्षुरसस्नपनम् ।

अर्घ—उदकचन्दन········अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नालिकेरजलैः स्वच्छैः शीतैः पूतैर्मनोहरैः ।
स्नानक्रियां कृतवतस्य [illegible] बिम्बदर्शिनः ॥१९॥

मंत्र—ओं ह्रीं··········इति नालिकेररसस्नपनम् ।

अर्घ—उदकचन्दन······ अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सुपक्वैः कनककच्छायैः [illegible] ।
[illegible] स्नान कुर्वे: [illegible] ॥२०॥

मंत्र—ओं ह्रीं············इति [illegible]रसस्नपनम् ।

अर्घ—उदकचन्दन··········अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(घृताभिषेक ३)

उत्कृष्टवर्ण-नव-हेम-रसाभिराम—
देहप्रभावलयसङ्गमलुप्तदीप्तिम् ।
धारा घृतस्य शुभगन्धगुणानुमेयां
वन्देऽर्हतां सुरभिसंस्नपनोपयुक्ताम् ॥२१॥

मंत्र—ओं ह्री…………इति घृतस्नपनम् ।
अर्घ—उदकचंदन……अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(दुग्धाभिषेक ४)

सम्पूर्ण-शारद-शशांकमरीचिजाल—
स्यन्दैरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहैः ।
क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिच्य मानाः ।
सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि ॥२२॥

मंत्र—ओं ह्रीं…………इति दुग्धाभिषेकस्नपनम् ।
अर्घ—उदकचन्दन………अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(दध्यभिषेक ५)

दुग्धाब्धिवीचिपयसंचितफेनराशि-
पाण्डुत्वकांति मवधीरयतामतीव ।
दध्नांगना जिनपतेः प्रतिमां सुधारा ।
सम्पद्यतां सपदि वाञ्छितसिद्धये वः ॥२३॥

मंत्र—ओं ह्री……… इति दधिस्नपनम् ।
अर्घ—उदकचंदन……अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

[illegible]षि ६)

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहैः ।
सर्वाभिरौषधिभिरर्हत उज्ज्वलाभिः ।
उद्वर्तितस्य विदाम्यभिषेकमेला-
कालेयकुंकुमरसोत्कटवारिपूरैः ॥२४॥

मन्त्र—ॐ ह्रीं..............इति सर्वौषधिस्नपनम् ।
अर्घं—उदकचंदन........अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चतुःकोणकुंभकलशाभिषेक ७)

ष्टैर्मनोरथशतैरिव भव्यपुंसां । पूर्णैः सुवर्णकलशैर्निखिलैर्वसानैः ।
ससागरविलंघनहेतुसेतुमाप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्रम् ॥२

मंत्र—ॐ ह्रीं........इति चतुःकोणकुम्भकलशस्नपनम् ।
अर्घं—उदकचंदन............अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चन्दनलेपनम् ८)

संगुद्धशुद्धया परया विशुद्ध्या । कर्पूरसम्मिश्रितचन्दनेन ॥
जिनस्य देवासुरपूजितस्य । विलेपनं चारु करोमि भक्त्या ॥२

मंत्र—ॐ ह्रीं... इति चंदनलेपनम् करोमीति स्वाहा ।
अर्घं—उदकचंदन ...अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(पुष्पांजलि ९)

[illegible]
[illegible] जिनेन्द्र सदा ।
[illegible]
ॐ [illegible]

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रुचिके कुंडले मानुषांके ।
इष्वाकारेंजनाद्रौ दधि-मुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भवन-महितले यानि चैत्यालयानि ।५।

द्वौ कुंदेंदु-तुषार-हार-धवलौ द्वाविंद्रनील-प्रभौ,
द्वौ बंधूक-सम-प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ ।
शेषाः षोडश जन्ममृत्युरहिताः संतप्त-हेम-प्रभाः,
ते संज्ञान-दिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ।६।

ओं ह्रीं त्रिलोक संबंधि-कृत्याकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्व० ॥

(इच्छामि भक्ति बोलते समय पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

इच्छामि भंते ! चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि, तीसु वि लोयेसु भवणवासिय वाण-विंतर-जोयसिय-कप्पवासिय त्ति चउविहा देवाः सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धूव्वेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ह्लाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति । अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं ॥

(यहां पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये)

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रुचिके कुंडले मानुषांके ।
इष्वाकारेंजनाद्रौ दधि-मुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भवन-महितले यानि चैत्यालयानि ।५।

द्वौ कुंदेंदु-तुषार-हार-धवलौ द्वाविंद्रनील-प्रभौ,
द्वौ बंधूक-सम-प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ ।
शेषाः षोडश जन्ममृत्युरहिताः संतप्त-हेम-प्रभाः,
ते संज्ञान-दिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ।६।
ओं ह्रीं त्रिलोक संबंधि-कृत्याकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वं०

(इच्छामि भक्ति बोलते समय पुष्पांजलि क्षेपण करना ।)

इच्छामि भंते ! चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि, तीसु वि लोयेसु भवणवासिय वाण-वितर-जोयसिय-कप्पवासिय त्ति चउविहा देवाः सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धूव्वेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ह्लाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति । अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं ॥

(यहां पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये)

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंवुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रुचिके कुंडले मानुषांके ।
इष्वाकारेंजनाद्रौ दधि-मुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भवन-महितले यानि चैत्यालयानि ।५।

द्वौ कुंदेंदु-तुषार-हार-धवलौ द्वाविंद्रनील-प्रभौ,
द्वौ वंधूक-सम-प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ ।
शेषाः षोडश जन्ममृत्युरहिताः संतप्त-हेम-प्रभाः,
ते संज्ञान-दिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ।६।
ओं ह्रीं त्रिलोक संवंधि-कृत्याकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्व० ।

(इच्छामि भक्ति वोलते समय पुष्पांजलि क्षेपण करना ।)

इच्छामि भंते ! चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि, तीसु वि लोयेसु भवणवासिय वाण-वितर-जोयसिय-कप्पवासिय त्ति चउविहा देवाः सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धूव्वेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ह्लाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति । अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ वोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं ॥

(यहाँ पर नौ वार णमोकार मंत्र जपना ।)

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंवुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रुचिके कुंडले मानुषांके ।
इष्वाकारेंजनाद्रौ दधि-मुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भवन-महितले यानि चैत्यालयानि ।५।

द्वौ कुंदेंदु-तुषार-हार-धवलौ द्वाविंद्रनील-प्रभौ,
द्वौ वंधूक-सम-प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ ।
शेषाः षोडश जन्ममृत्युरहिताः संतप्त-हेम-प्रभाः,
ते संज्ञान-दिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ।६।
ओं ह्रीं त्रिलोक संवंधि-कृत्याकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वं० ॥

(इच्छामि भक्ति वोलते समय पुष्पांजलि क्षेपण करना ।)

इच्छामि भंते ! चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि, तीसु वि लोयेसु भवणवासिय वाण-विंतर-जोयसिय-कप्पवासिय त्ति चउविहा देवाः सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धूव्वेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ह्लाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति । अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ वोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं ॥

(यहां पर नौ वार णमोकार मंत्र जपना चाहिये)

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि० ॥१॥

आनन्द-कन्द-जनकं धन-कर्म-मुक्तं
सम्यक्त्व-शर्म-गरिमं जननार्तिवीतम्।
सौरभ्य-वासित-भुवं हरि-चन्दनानां
गन्धैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्ध-चक्रम् ॥२॥

ॐ ह्रीं सिद्ध चक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व० ॥२॥

सर्वावगाहन-गुणं सुसमाधि-निष्ठं
सिद्धं स्वरूप-निपुणं कमलं विशालम्।
सौगन्ध्य-शालि-वनशालि-वराक्षतानां
पुंजैर्यजे-शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम् ॥३॥

ॐ ह्रीं सिद्ध चक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० ॥३॥

नित्यं स्वदेह-परिमाणमनादिसंज्ञं
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम्।
मन्दार-कुन्द-कमलादि-वनस्पतीनां
पुष्पैर्यजे शुभतमै-र्वरसिद्धचक्रम् ॥४॥

ॐ ह्रीं सिद्ध चक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ॥४॥

ॐ ह्री सिद्ध चक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फल
निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः सङ्गं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं रम्यं चरुं दीपकम् ।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वाञ्छितम् ।।९।

ॐ ह्रीं सिद्ध चक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अ
निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं,
सूक्ष्म-स्वभाव-परमं यदनन्तवीर्यम् ।
कर्मौघ-कक्ष-दहनं सुख-शस्यबीजं,
वन्दे सदा निरुपमं वर-सिद्धचक्रम् ।।१०।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं निर्वपामी
स्वाहा ।।१०।।

त्रैलोक्येश्वर-वन्दनीय-चरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं
यानाराध्य निरुद्ध-चण्ड-मनसः सन्तोऽपि तीर्थंकराः ।
सत्सम्यक्त्व-विबोध-वीर्य्य-विशदाऽव्याबाधताद्यैर्गुणै—
र्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान् ।।११।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

वरकंज कदंव कुरंड, सुमन सुगंध भरे।
जिन अग्र धरों गुणमंड, काम-कलंक हरे॥ चौ० ४॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०

मनमोहव मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।
रस पूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥चौ०॥
ओं ह्रीं वृषभादि वीरातेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०।

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे।
सव तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागे ॥चौ० ६॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०

दशगंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खेवत हों।
मिस धूम करम जरि जांहि, तुम पद सेवत हों ॥चौ०७॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं० निर्वपामी०॥

शुचिपक्वसरस फल सार, सव ऋतु के ल्यायो।
देखत दृग मनको प्यार, पूजत सुख पायो॥ चौ० ८॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामी०

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों॥
चौवीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही।
पदजजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही ॥९॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि०॥

जयमाला

श्रीमत तीरथनाथ पद, माथ नाय हितहेत।
गाऊं गुणमाला अवै, अजर अमर पद देत ॥१॥

छन्द घत्तानन्द ।

जय भवतम भंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छकरा ।
शिव मग परकाशक,अरिगण नाशक चौबीसों जिनराज वरा ॥२॥

छन्द पद्धरी ।

जय ऋषभदेव ऋषिगण नमंत । जय अजित जीत वसु अरि तुरंत ।
जय संभव भवभय करत चूर । जय अभिनंदन आनन्दपूर ।३।
जय सुमति सुमतिदायक दयाल । जयपद्म पद्मद्युति तनरसाल
जय जय सुपास भवपास नाश । जय चन्द चंदतनद्युति प्रकाश ।४।
जय पुष्पदंत द्युतिदंत सेत । जय शीतल शीतल गुणनिकेत ।
जय श्रेयनाथ नुतसहसभुज्ज । जय वासवपूजित वासुपुज्ज ।५।
जय विमल विमलपददेनहार । जय जय अनन्त गुणगण अपार ।
जय धर्म धर्म शिव शर्म देत । जय शान्ति शान्ति पुष्टी करेत ।६।
जय कुन्थु कुन्थुवादिक रखेय । जयअर जिनवसुअरि छयकरेय ।
जय मल्लि मल्ल हतमोहमल्ल । जय मुनिसुव्रत व्रतशल्लदल्ल ।७।
जय नमि नित वासवनुत सपेम । जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम ।
जय पारसनाथ अनाथनाथ । जय वर्द्धमान शिवनगर साथ ।८।

छन्द घत्तानन्द ।

चौबीस जिनन्दा आनन्दकन्दा, पापनिकन्दा सुखकारी ।
तिनपद जुगचन्दा उदय अमन्दा, वासववन्दा हितकारी ।९।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरान्तेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सोरठा ।

भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसौं जिनराजवर ।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै ॥१०॥

इत्याशीर्वादः ।

श्री महावीर जिनपूजा

मत्त गंयद

श्रीमत वीर हरें भवपीर, भरें सुखसीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरीकरदंक, नये हरि पंकति मौलि सुआई॥
मैं तुमको इत थापत हौं प्रभु, भक्तिसमेत हिये हरषाई।
हे करुणा-धन-धारक देव, इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई॥

ओं ह्री श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
[ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(चाल-द्यानतरायकृत नंदीश्वराष्टकादिक अनेक रागों में बनती है)

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचन भृंग भरों।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातें धार करों॥
श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो॥१॥

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि०।

रितुफल कल-वर्जित लाय, कंचन थार भरों ।
शिव फलहित हे जिनराय, तुम ढिग भेंट धरों ।।श्रीवीर०।
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व० ।
जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों ।
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों ।।श्रीवीर०।।
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि० ।

पंचकल्याणक । राग टप्पा ।

मोहि राखो हो सरना, श्री वर्द्धमानजिनरायजी, मोहिराखो० ।।
गरभ साढ़सित छट्ट लियो तिथि, त्रिसला उर अघ हरना ।
सुर सुरपति तित सेव करी नित, मैं पूजूं भवतरना ।।मोहि०
ओं ह्रीं आषाढ़ शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कनवरना ।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना ।।
मोहि राखो हो० ।।
ओं ह्रीं चैत्रशुक्ला त्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना ।
नृप कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना ।।
मोहि राखो हो०।।
ओं ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

सोरठा

ओंकार ध्वनिसार, द्वादशांग वाणी विमल।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जड़ता हरै॥

पहलो आचारांग वखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानों।
दुजो सूत्रकृतं अभिलापं, पद छत्तीस सहस गुरु भापं॥
तीजो ठाना अंग सुजानं, सहस बयालिस पद सरधानं।
चौथो संमवायांग निहारं, चौंसठ सहस लाख इक धारम्॥
पंचम व्याख्या प्रगपति दरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठो ज्ञातृकथा विसतारं, पांच लाख छप्पन हज्जारं॥
सप्तम उपासकाध्ययनगं, सत्तर सहस ग्यारलख भंगं।
अष्टम अंतकृतं दस ईसं, सहस अठाइस लाख तेईसं॥
नवम अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरानव सोल हजारं॥
ग्यारम सूत्रविपाक मु भाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं।
चार कोड़ि अरु पंद्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरुशाखं॥
द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं, इकसौ आठ कोड़ि पन वेदं।
अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्या हन हैं।
इक सौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्व पद माने।
कोड़ि इकावन आठ हि लाखं, सहस चुरासी छह सौ भाखं
साढे इकीस श्लोक बताये, एक एक पद के ये गाये॥

जयमाला

सोरठा

ओंकार ध्वनिसार, द्वादशांग वाणी विमल।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जड़ता हरै॥
पहलो आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानों।
दुजो सूत्रकृतं अभिलापं, पद छत्तीस सहस गुरु भापं॥
तीजो ठाना अंग सुजानं, सहस वयालिस पद सरधानं।
चौथो संमवायांग निहारं, चौंसठ सहस लाख इक धारम्॥
पंचम व्याख्या प्रगपति दरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठो ज्ञातृकथा विसतारं, पांच लाख छप्पन हज्जारं॥
सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यारलख भंगं।
अष्टम अंतकृतं दस ईसं, सहस अठाइस लाख तेईसं॥
नवम अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरानव सोल हजारं॥
ग्यारम सूत्रविपाक सु भाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं।
चार कोड़ि अरु पंद्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरुशाखं॥
द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं, इकसौ आठ कोड़ि पन वेदं।
अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्या हन हैं॥
इक सौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्व पद माने॥
कोड़ि इकावन आठ हि लाखं, सहस चुरासी छह सौ भाखं।
साढे इकीस श्लोक बताये, एक एक पद के ये गाये॥

श्री भगवान् पार्श्वनाथ जी की स्तुति

तुम से लागी लगन, लेलो अपनी शरण, पारस प्यारा।
मेटो मेटो जी संकट हमारा ॥

निश दिन तुमको जपूं पर से नेहा तजूं।
जीवन सारा, तेरे चरणों में बीते हमारा ॥
मेटो मेटो० ॥

अश्वसेन के राज दुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे।
सब से नेहा तोड़ा, जग से मुंह को मोड़ा, संयम धारा ॥
मेटो मेटो० ॥

इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये।
आशा पूरो सदा, दुःख नहीं पावें कदा, सेवक थारा ॥
मेटो मेटो० ॥

जगकेदुःखकी तो परवाह नहीं है,स्वर्ग-सुखकी भी चाह नहीं है।
मेटो जामन मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा ॥
मेटो मेटो० ॥

लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊं, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊं ॥
'पंकज' व्याकुल भया, दर्शन बिन यह जिया लागे खारा ॥
मेटो मेटो० ॥

...शांति पाठ स्तुति

(शांति पाठ बोलते समय दोनों हाथों से पुष्प वृष्टि करते रहें)

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शील-गुणव्रत-संयम पात्रं ।
अष्टशतार्चित-लक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममंबुजनेत्रं ॥१॥

पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिंद्रनरेन्द्र गणैश्च ।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः षोडशतीर्थंकरं प्रणमामि ॥२॥

दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ।
आतपवारणचामर युग्मे यस्य विभाति च मंडल तेजः ॥३॥

तं जगदर्चित शांति-जिनेन्द्र शांतिकरं शिरसा प्रणमामि ।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांति मह्यमरं पठते परमां च ॥४॥

येऽभ्यर्चिता मुकुट-कुन्डल-हार-रत्नैः शक्रादिभिःसुरगणैः
स्तुतिपादपद्माः ।
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपास्तीर्थंकरा सततशांति-
करा भवन्तु ॥५॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांति भगवान् जिनेन्द्रः ॥६॥

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यांतु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौर-मारी क्षणमपि जगतां मास्म भूज्जीव लोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥७॥

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः ।
कुर्वन्तु जगतां शांति वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥८॥

यथेष्ठ प्रार्थना

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ।

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः ।
सद्वृतानां गुणगणकथा दोष-वादे च मौनम् ॥
सर्वस्यापि प्रिय-हित-वचो भावना चात्मतत्त्वे ।
सम्पद्यन्तां मम भव-भवे यावदेतेऽपवर्गः ॥९॥

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाण-सम्प्राप्तिः ॥१०॥

अक्खर-पयत्थहीणं मत्ता-हीणं च जं मए भणियं ।
तं खमउ णाणदेवय मज्झ वि दुक्खखयं दिंतु ॥११॥

दुक्खखओ कम्म खओ समाहिमरणं च वोहिलाहोय ।
मम होउ जगद्बंधव ! तव जिणवर चरणसरणेण ॥१२॥

विसर्जन पाठ

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया ।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वरः ॥१॥
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं ।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वरः ॥२॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वरः ॥३॥

आहूता ये पुरा देवा लब्धभागा यथाक्रमम् ।
ते मयाऽभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यान्तु यथास्थितं ॥४॥

सर्वमंगलमांगल्यं सर्वकल्याणकारकं ।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयतु शासनम् ॥५॥

यह रक्षा स्तोत्र है इसे प्रतिदिन भी पढ़ना चाहिए। विशेष रूप से यह सामायिक से पूर्व पढ़ा जाता है। यदि निर्जन वन, नदीतट आदि भयानक स्थानों पर रुकना पड़े तो इसे पढ़कर अपने चारों तरफ लाइन खींच देने से व्यंतर एवं दुष्ट जीवों से रक्षा होती है।

अथ वज्रपंजरस्तोत्रम्

परमेष्ठिनमस्कारं सारं नवपदात्मकम्।
आत्मरक्षाकरं वज्रपंजराख्यंस्मराम्यहम् ॥१॥
ॐ णमो अरहंताणं शिरस्कन्धरलं स्थितम्।
ॐ णमो सिद्धाणं मुखे मुखपटाम्बरम् ॥२॥
ॐ णमो आइरियाणं अंगरक्षातिशायिनी।
ॐ णमो उवज्झायाण आयुध हस्तयोर्दृढम् ॥३॥
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं मोचके पदयोः शुभे।
एसो पंच णमोकारो शिला वज्रमयो तले ॥४॥
सव्वपप्पणासणो वप्रो वज्रमयो वहिः।
मंगलाणं च सव्वेसि खदिरांगारखातिका ॥५॥
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं पढमं हवइ मगलम्।
वप्रोपरि वज्रमयं पिधानं देहरक्षणे ॥६॥
महाप्रभावरक्षेयं क्षुद्रोपद्रवनाशिनी।
परमेष्ठीपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥७॥
यश्चैवं कुरुते रक्षां परमेष्ठिपदैः सदा।
तस्य न स्याद् भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥८॥

—:o:—

ॐणमो अरहंताणं-यह शिर और कंधो की रक्षा करे।

ॐ णमो सिद्धाणं-यह मुख और पटाम्वर की रक्षा करे ॐ णमो आयरियाणं-यह साधकों की अंग-रक्षा करता है ॐ णमो उवज्झायाणं-यह दोनों हाथों की रक्षा करे आयुधों की रक्ष करे। ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं—चरणों की रक्षा करे। यह पंच नवकार दोनोंपैरों में शालिवज्र के समान है सव्व पापप्पणासणं यह वाहर वज्रमय है और मंगलाणं च सव्वेसिं खदिर की अग्नि के लिए खाई के समान है पढमं हवइ मंगलं यह स्वाहान्त पद जानना चाहिए। यह वज्र पंजर देह धारियों के शरीर पर वज्रमय पिधान (आवरण) है। यह महा-प्रभावमयी रक्षा है क्षुद्र उपद्रवों का नाशक है परमेष्ठियों के पदों से उत्पन्न है और पूर्वाचार्यों द्वारा कहा गया है जो इस प्रकार इन परमेष्ठी पदों से अपनी रक्षा करता है, उसे कोई भय, व्याधि और आधि नहीं होती है।